सत्यध्वज

जुलाई, अगस्त, सितम्बर 2005

वर्ष - 16
अंक - 49

गुरूघासीदास एवं उनके सतनाम आन्दोलन पर आधारित एकमात्र अनियतकालीन हिन्दी पुस्तक

श्रद्धांजलि अंक
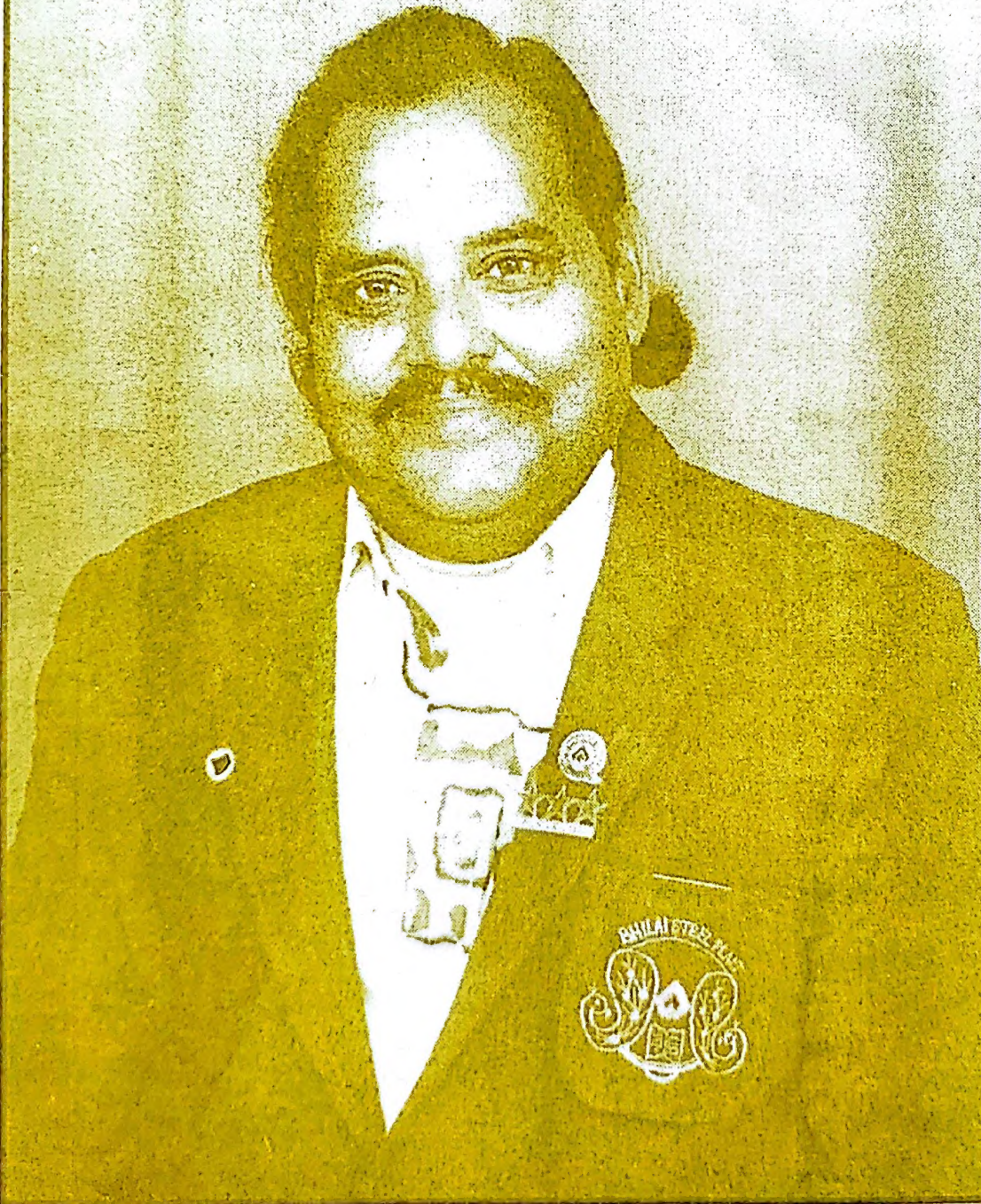
अंतर्राष्ट्रीय पंथी कलाकार स्व. देवदास बंजारे

दो महत्वपूर्ण अधिशोध प्रबंध

गुरूघासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर में एम.फिल.हिन्दी हेतु प्रस्तुत -

दादूलाल जोशी 'फरहद' का साहित्य संसार

विषय सूची

शोध निर्देशक

डॉ. विनय कुमार पाठक
पी.एच.डी. डी.लिट् (भाषा विज्ञान)
पी.एच.डी.डी.लिट् (हिन्दी)
शा. स्वशासी स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय बिलासपुर

शोधकर्त्री

कु. संगीता बंजारा
एम.फिल. छात्रा
बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. सन्तराम देशमुख : व्यक्तित्व एवं कृतीत्व

विषय सूची

शोध निर्देशक

डॉ. विनय कुमार पाठक
पी.एच.डी. डी.लिट् (भाषा विज्ञान)
पी.एच.डी.डी.लिट् (हिन्दी)
शा. स्वशासी स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय बिलासपुर

शोधकर्त्री

कु. पुष्पलता टोंडर
एम.फिल. (छात्रा)
शा.स्ना. कन्या महा.बिलासपुर

सत्यध्वज

गुरूघासीदास एवं उनके सतनाम आन्दोलन पर आधारित एकमात्र अनियतकालीन हिन्दी पुस्तक

जुलाई, अगस्त, सितम्बर - 2005

वर्ष-16 अंक-49

-: इस अंक में :-

दादूलाल जोशी ''फरहद'' मु. फरहद, पो. सोमनी जि. राजनांदगांव छत्तीसगढ़ द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित

✧ सत्यध्वज बुलेटिन अनियतकालीन और अव्यावसायिक

✧ सम्पादनप्रबंधन पूर्णतः अवैतनिक

टीप :- 1. सत्यध्वज में प्रकाशित रचनाओं में उल्लेखित विचार लेखकों के स्वयं के विचार हैं जो कि उनके समझ और ज्ञान पर आधारित है। उन विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

2. सत्यध्वज का प्रकाशन गुरू घासीदास जी के व्यक्तित्व और कृतित्व से संबंधित साहित्यिक अभाव की पूर्ति का प्रयास मात्र है। अतएव इस संबंध में किसी व्यक्ति संस्था अथवा समूह के द्वारा उठाये गये किसी भी तरह के विवाद स्वीकार्य नहीं है।

पत्र व्यवहार का पता

दादूलाल जोशी ''फरहद''
मु. फरहद, पो. सोमनी
जि. राजनांदगांव छत्तीसगढ़
फोन : 07744-220814
मो. नं. : 9302835463

सहयोग राशि
मात्र–25 रूपये

स्व. देवदास बंजारे : एक युगपुरूष का अवसान

सम्पादकीय

आधुनिक पंथी के पुरोधा, अन्तर्राष्ट्रीय कलाकार भाई देवदास बंजारे का दुखद और असामयिक निधन के समाचारों ने हमें भीतर तक हिलाकर रख दिया। हमें सहसा विश्वास ही नहीं हुआ कि जो कल तक हमारे बीच हंसता, गाता और बतियाता रहा वह हमसे इस तरह अकस्मात् बिछुड़ जायेगा। हमारे मर्मतल में दुख का महाप्लावन उमड़ आया और अब हमारे इर्द-गिर्द एक न समाप्त होने वाला अपूरणीय खाली पन पसर गया है। 26 अगस्त 2005 की सुबह का वह दुर्भाग्यपूर्ण क्षण; जब भाई देवदास बंजारे जी का रायपुर के निकट सड़क दुर्घटना में देहावसान हुआ; उसे याद करके आज भी हमारा हृदय द्रवित हो उठता है। भाई स्व. देवदास जी हमारे गौरव थे। वे हमारे आत्मविश्वास थे, भविष्य की आशा थे। वे एक ऐसे युग पुरूष थे; जिन्होंने छत्तीसगढ़ में, दिलो से दिलो को जोड़ने का काम किया। उन्होंने छत्तीसगढ़ की समरसता, एकता और अस्मिता को जानने-समझने की अनूठी नई पद्धति दी। वास्तव में स्व. देवदास बंजारे जी छत्तीसगढ़ के एक महान् युगपुरूष थे। जो काम उन्होंने छत्तीसगढ़ की जनता के लिए किया वैसा तो कोई बिरला ही महापुरूष कर पाते हैं। उनकी लोकसेवा का माध्यम लोककला पंथी था। पंथी विधा में सर्वथा नूतन प्रयोग करके उन्होंने न केवल छत्तीसगढ़ और भारत वर्ष में बल्कि पूरे विश्व में उसे जन-जन का प्रिय बना दिया।

यह तो सर्वविदित है कि पंथी का सम्बन्ध गुरूघासीदास जी और उनके द्वारा स्थापित सतनाम धर्म से रहा है। स्व. देवदास बंजारे के द्वारा सन् 1970 में नूतन प्रयोग करने के पूर्व पंथी का आदिकालीन पारम्परिक स्वरूप प्रचलन में था। वह ऐसा युग था; जब सतनामियो के प्रत्येक क्रियाकलाप और धार्मिक आचार-विचार को अलग ही नजरिये से देखा जाता था। पंथी नृत्य का आयोजन पहले श्री कृष्ण जन्माष्टमी के दिन बहुतायत में किया जाता था। उसी दिन जैतखाम में श्वेतध्वज चढ़ाया जाता था। यह बात भी गौरतलब है कि वह आयोजन श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में नहीं होता था। दरअसल वह गुरू बालकदास जी की जयंती के उपलक्ष्य में होता था। क्योंकि जन्माष्टमी के दिन ही गुरू बालकदास जी का जन्म हुआ था। यद्यपि स्व.नकुलदेव ढ़ीढ़ी जी के द्वारा गुरूघासीदास जयंती की शुरूआत ग्राम - भोरिंग में 18 दिसम्बर सन् 1937 में हो चुकी थी तथापि उसका व्यापक प्रचार-प्रसार सभी गांवों में नहीं हो पाया था।

सन् साठ के दशक में ममतामयी मिनीमाता और समाज-प्रमुखों के द्वारा 18

दिसम्बर को ही गुरूघासीदास जयंती मनाने और जैतखाम में श्वेतध्वज फहराने के लिए पम्फलैट के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया गया। तब भी पंथी का वही पुराना स्वरूप प्रचलित था। जब गांवों में पंथी का आयोजन होता था तब गैर सतनामी जन उसे या तो दूर से देखते थे या फिर उसे महत्वहीन समझकर देखते ही नहीं थे। कुछ जगहों में प्रायः खिल्लियां भी उड़ाई जाती थी और व्यंग्यात्मक टिप्पणियां भी की जाती थी। इस तरह सतनामी और गैर सतनामियों के बीच एक गहरी विभाजक रेखा बनी हुई थी। एक न समाप्त होने वाली दूरी बनी हुई थी। उस विभाजक रेखा को सन् 1972 के बाद, मिटाने का अगर किसी को श्रेय जाता है; तो वह केवल स्व. देवदास बंजारे जी को जाता है उन्होंने पंथी को ऐसा रोचक, ऐसा आकर्षक, ऐसा मादक और ऐसा सारगर्भित स्वरूप दिया जिसके चलते पंथी अपने साम्प्रदायिक दायरे को तोड़कर जन जन के तन-मन में समा गया। वह लोकप्रिय बनगया। फलस्वरूप लोगों ने न केवल पंथी को बल्कि सतनामी समाज को भी एक नये रूप में जाना, समझा। सतनामियो के प्रति गैर-सतनामियों के दृष्टिकोण में, व्यापक परिवर्तन आया। वह परिवर्तन सामाजिक-साम्प्रदायिक समरसता का प्रतीक बन गया। हिन्दुआ और सतनामी का जो कुछ भेद बचा था उसे समाप्त करके एक पूर्ण छत्तीसगढ़िया होने का भाव दिया। स्व. देवदास बंजारे ने अपनी सूझ-बूझ और अप्रतिम प्रतिभा के द्वारा छत्तीसगढ़ में एक नये युग का सूत्रपात कर दिया। इस अर्थ में स्व. बंजारे जी सचमुच छत्तीसगढ़ के युगपुरूष थे। जातीय भेदभाव, वैमनस्यता और नफरत के सारे कलुष स्व. बंजारे के गायन, वादन और नृत्य की स्वर लहरियों में जैसे धुलते चले गये और एक अटूट धागे में आबद्ध छत्तीसगढ़ एक स्नेहिल कुटुम्ब के रूप में उभरता-निखरता दिखाई देने लगा। जो काम स्व. देवदास बंजारे ने किया वैसा किसी धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक अगुवाओं के द्वारा किया जाना यदि असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है।

यदि केवल सतनामी समाज में अवलोकन करें तो 11 अगस्त 1972 के बाद सतनामी समाज में स्व. देवदास बंजारे के कद का एक भी व्यक्ति दिखाई नहीं देता है। यह केवल लोककला के क्षेत्र में ही नहीं अपितु सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्र में भी सतनामी समाज में स्व. देवदास बंजारे जैसा एक भी युग पुरूष नही हुआ जो अपने अपने क्षेत्र में सर्वथा नूतन प्रयोग करके समाज के मान सम्मान को बढ़ा सके।

यह विडम्बना ही है कि स्व. देवदास बंजारे की कला का भरपूर आनन्द सब लोग लेते रहे और उन्हें खूब वाहवाही भी देते रहे किन्तु ऐसे महान साधक और पुरोधा का समयानुरूप उचित मूल्यांकन नहीं किया गया। उन्हे उचित सम्मान नहीं मिला जिसका कि वे हकदार थे।

आज से बहुत साल पहले जब बंगाल के ''छाऊ'' नृत्य के एक कलाकार को तथा उ.प्र. की एक प्रख्यात् कजली गायिका को पद्मश्री सम्मान मिला था उसी समय स्व. देवदास बंजारे को भी पद्मश्री मिलना सर्वथा उपयुक्त था। अब जबकि स्व. बंजारे जी हमारे बीच नहीं है, तब यह कहना कि उसे क्या दिया जा रहा था, क्या दिया जा रहा है और क्या दिया जाना चाहिए ? इन मुद्दो पर चर्चा बहस किया जाना बहुत सटीक प्रतीत नहीं होता है।

दूसरी ओर सतनामी समाज के नेताओं की क्रियाविधि ही निराली है। दो लोक सभा सदस्य एक राज्य सभा सदस्य और दस विधायकों से भरे पूरे सतनामी समाज में प्रतिभाएं किस तरह उपेक्षित होती है यह स्व. देवदास बंजारे जी के उदाहरण से समझा जा सकता है। बहरहाल ! स्व. देवदास बंजारे की पंथी शैली पर शोध परक साहित्यिक सृजन की महती आवश्यकता है। उनके जीवन काल में इस तरह के साहित्यिक लेखन नहीं हो पाया। जिसमें उनकी कला साधना का सम्पक् और गुरू गंभीर विवेचन हुआ हो।

स्व. देवदास बंजारे जी एक महान कलाकार थे, साथ ही वे सीधे और सरल व्यक्ति थे। अपने से बड़े को सम्मान और छोटों को प्यार देने से वे कभी नहीं चूके। ऐसे हमारे प्रिय कलाकार, प्रिय मित्र, प्रिय भाई, और समाजोन्नायक युगपुरूष से बिछुड़ जाने का हमें गहन दुख है। हमारी नजरें भाई देवदास को प्रत्येक साहित्यिक, सांस्कृतिक मंचों पर हमेशा तलासती रहेगी। महान व्यक्ति की भौतिक काया ही विनष्ट होती है। यश रूपी काया अमर रहती है। स्व. देवदास बंजारे जी सदा अमर रहेंगे। उनकी शोहरत, कयामत तक इस कायनात में दायमी रहेगी। ऐसे युग पुरूष को सत्यध्वज परिवार की ओर से हम अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

दादूलाल जोशी ''फरहद''
सम्पादक

पाठकों के पत्र

प्रिय सम्पादक दादूलाल जोशी ''फरहद''

जय सतनाम

अंक 48 में, आपने मेरे पंथी गीत चौथा भाग के गुरू वचन को प्रकाशित किया हैं। इसलिए आपको धन्यवाद देता हूँ। इसी प्रकार आपने डॉ. हीरालाल शुक्ल जी की पुस्तक के अंशों को छापे हैं साथ ही श्री बुलनदासजी के गीत दिये हैं इसके लिए बधाई। इसी तरह मेरे पंथी गीत जो आपको अच्छा लगे छाप दिया करें; यही निवेदन है।

एक सज्जन ने आपसे पूछा है कि पत्रिका का अनुवाद उड़िया भाषा में प्रकाशित करना चाहते हैं। यह बहुत ही अच्छा सुझाव है। आप सोचकर उसे आदेश दें ताकि गुरू का संदेश हो सके तो सभी भाषा में पहुंचे। आप गुरू बाबा के संदशों को पन्ने-पन्ने पर प्रकाशित करते रहें आगे बढ़ते रहें। नाम ही तो रहेगा बाकी धन, परिवार सब बिखर जायेंगे।

✦ **पुरानिक लाल चेलक**
केम्प-2, भिलाईनगर

अत्यन्त प्रिय विद्वान,
श्री दादूलाल जोशी ''फरहद''
प्रधान सम्पादक ''सत्यध्वज''

आप का समाज हितैषी चिन्तन लेखन और सत्यध्वज सम्पादन, बुद्धि जीवियों में अच्छा प्रभाव डाल रहा है, तभी तो ''सत्यध्वज'' अपना 16 वां वर्ष पूर्ण करने की स्थिति में आ रहा है और आप 48 वां सोपान पर ''सत्यध्वज'' पत्रिका को हिन्दी साहित्य जगत में स्थापित कर अन्य सामाजिक बंधुओं को अचंभित कर दिया है। हमें गर्व है, आर्थिक थपेड़ों को झेलते हुए भी अन्य विघ्नबाधाओं को, कटुशब्दों के तुफानों को, सहते हुए अडिग मंजिल स्तंभ की भांति; हर मौसम में ऊंचाई की ओर अग्रसर हैं। 49 वां, सोपान स्थापित करने में व्यस्त होगें, आपका दृढ़ संकल्पित भावनाओं से ओतप्रोत हृदय, तन, मन, मस्तिष्क निरंतर संचालित रहे स्वस्थ रहे आज समाज के अन्य बुद्धिजिवियों को आप के इस कृतित्व पर गर्व न हो, परन्तु मुझे गर्व है कि, गुरू बाबा ने आप जैसे ''समाज को जगाने के लिए, हम सामाजिक बंधुओं के लिए ''साहित्य रत्न'' ''साहित्य पुत्र'' उत्पन्न कर ''दिशाहीन'' गिरे हपटे मनुष्यों के मनोबल, तनोबल और बुद्धि बलों में छुपी शक्ति को प्रोत्साहित कर, जगाने तथा उठाने का कार्य, आप ''सम्पादन लेखन द्वारा कर रहे हैं, स्तुत्य ही नहीं, अपितु आने

वाला कल भविष्य के लिए सम्मानीय पथ प्रदर्शक है। इस पत्रिका के माध्यम से ''अन्य समाज के व्यक्तियों में'' सतनामी समाज की प्रतिष्ठा निश्चित वृद्धि होती आ रही है, होती रहेगी आप ''सत्यध्वज'' के माध्यम से गुरूघासीदास के विश्वकल्याण के सारगर्भित चिन्तन को, जन कल्याण की सटिक अभिव्यक्ति को, विश्व पटल पर ''50 वां स्वर्ण जयन्ती अंक'' जन मानस पर स्थापित करने जा रहे हैं निश्चित ही हम सबकी कामना, हम सभी के तन, मन, धन सहयोग से हम सबकी मनोकामना गुरू बाबा की सदकृपा से अवश्य ही पूर्ण होगी।

''सत्यध्वज'' निश्चित ही हिन्दी साहित्य जगत के आकाश मंडल में एक तारिका के रूप में अवश्य स्थापित होगा 0 इन्ही शुभ कामनाओं के साथ ...

✦ **बंशीलाल जोशी**

सह सम्पादक ''सत्यध्वज'' सिंघोला राजनांदगांव (छ.ग.)

प्रिय भाई दादूलाल जोशी ''फरहद''

नमस्ते

कुशल रह कर आप सब की कुशलता चाहता हूँ। भाई जोशी श्री सुभाष चन्द्र कुर्रे जी से सत्यध्वज के अंक 47, 48 प्राप्त किया। विशद अध्ययन किया। भाई जोशी सत्यध्वज के अंक 47 में श्री जे. कृष्णमूर्ति के लेख मनोवैज्ञानिक है अति प्रशंसनीय है। भाई देवचन्द्र बंजारे द्वारा स्व. नकुलदेव ढ़ीढ़ी पर लिखे लेख बहुत वजनदार है, प्रेरक तत्वों से पूर्ण है। अंक 48 में सम्पादकीय पूरजोर असरदार है। भाऊराम धृतलहरे द्वारा लिखा ''सौवे तौन खौवे'' शीर्षक से सतगुरूघासीदास के योग साधना को साहित्य के प्रश्न उत्तर विधा से लोक हितार्थ विस्तारित किये हैं अति ही सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। दादूलाल जोशी फरहद द्वारा लिखा लेख ''गुरूघासीदास का चिकित्सा विधान'' अति ही प्रशंसनीय है। आज इस तरह की रचनाओं की आवश्यकता है भौतिकता के इस युग में समाज में धार्मिक एवं आध्यामिक भावों के संचरण के लिये सूक्ष्म चिन्तन से युक्त रचनाओं की। मैं आशा करता हू सत्यध्वज के अगले अंकों में उत्तम श्रेष्ठ रचनाएं पढ़ने को मिलेगी।

✦ **आचार्य जे. आर. महिलांगे**

एम. ए. (संस्कृत), विशारद (संस्कृत)

दल्ली राजहरा दुर्ग (छ.ग.)

आदरणीय जोशी जी

सत्यध्वज अंक 48 मिल चुका है इस अंक को पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई क्योंकि इस अंक में गुरूघासीदास पर बहुत ही अच्छे लेख हैं। हमारे सभी सदस्यों का भी यही विचार है कि गुरू घासीदास पर ही पूरी पत्रिका केन्द्रित हो जिससे अधिक से अधिक इस विषय पर लेखन होता रहे और अच्छे साहित्य का निर्माण हो सके। आपने सम्पादकीय में लिखा है वह 100% सही है कोई भी लेख हो समाज की साहित्य समिति द्वारा अनुमोदन के बाद ही प्रकाशित हो। इसी प्रकार विडीयों फिल्म या सी.डी. निर्माण वालों को समिति द्वारा अनुमोदन के बाद ही प्रसारित करना चाहिए जिससे गुरूघासीदास और सतनामी समाज का सही तस्वीर लोगों तक पहुँच सके।

इस अंक में विष्णु प्रसाद बंजारे, भूषण जांगड़े एवं अन्य लेखकों ने अपना अनमोल लेख भेजकर पत्रिका को अधिक सार्थक रूप दिया है। हम आशा करते है इसी प्रकार अपना लेख भेजते रहें। आप इतने कठिनाइयों के बाद भी इस पत्रिका को निकाल रहें है, यह समाज के लिए गर्व की बात है सतनामी समाज के सभी पढ़े-लिखे युवा, कर्मचारी एवं बुद्धिजीवियों से मेरा अपील है कि इस पत्रिका को अधिक से अधिक लोग ले जिससे समाज की यह पत्रिका निरंतर छपती रहे। अभी तक हमारे समाज में कई पत्रिकाएं निकली है परन्तु सत्यध्वज ही ऐसी पत्रिका है जो 16 साल से लगातार निकल रही है। अतः इसे आगे तक बढ़ाने में अपना सहयोग देवें। जोशी जी आपने पत्रिका के पत्र में मेरे कार्य की प्रशंसा की है मेरे से जितना हो सकता है मैं जरूर प्रयास करता हूँ और जो भी जिम्मेदारी मुझे आपने दी है उसे पूरा करने का प्रयास करूँगा आपका पत्र से मुझे भी बड़ा बल मिलता है मैं आपको भरोसा दिलाता हूँ कि मैं आपके साथ जरूर दूँगा आप अपने पथ पर बढ़ते चले सफलता तो जरूर मिलेगी। छत्तीसगढ़ में समाज और गुरूघासीदास पर क्या कार्य चल रहा है इस विषय पर लिखना।

✦ **कोमल गायकवार**, हबीबगंज भोपाल (म.प्र.)

महान कलाकार स्व. देवदास बंजारे जी के प्रति

श्र द्धां ज लि

माटी की सोंधी खुशबू
बिखराकर तुम कहां गए।
रूपहले स्वप्न सुनहरे
दिखलाकर तुम कहां गये॥
कुटिया में जन्म लेकर

छू-लिया तुमने आकाश।
पंथी के सुरम्य गगन मे,
तुमने फैलाया प्रकाश॥
ओ ! कला जगत के देवदूत
तुम कहां गए॥

✦ **सुभद्रा शर्मा**, सिविल लाइन दुर्ग

सतनाम संदेश वाहक - अन्तर्राष्ट्रीय पंथीगायक नर्तक देवदास बंजारे

✦ शिवप्रसाद जोशी (मुसरा)

परम पूज्य बाबा गुरूघासीदास जी के सतनाम संदेश को मांदर की थाप, घुंघरू की सुमधुर आवाज से ग्राम धनोरा से नाचते गाते विश्व के 64 देशों में आकाशीय ऊचाईयों तक ध्वजा फहराने वाले, सतनाम के डंका बजाने वाले पंथी गीत नृत्य के सिरमौर, युग पुरूष देवदास बंजारे का दुखद् निधन 26 अगस्त 2005 को सड़क दुर्घटना में हो गया है। इस त्रासदी को सतनामी ही नही सम्पूर्ण साहित्यिक, सांस्कृतिक जगत लोक संस्कारित दुनियाँ शायद ही भूल पाये।

दिनांक 5 दिसम्बर 1999 को दुर्ग जिला जनवादी लेखक संघ द्वारा कुर्मी भवन भिलाई में एक व्याख्यान माला आयोजित थी जिसका विषय था "बीसवी सदी के अवसान पर सामयिक दलित लेखन" उसमे पधारे श्री देवदास बंजारे से रात्रि 8 बजे भेंट कर मैने कुछ जानने का प्रयास किया। जिज्ञासा वश अनेक रोचक जानकारी प्राप्त किया डायरी के पन्नों से आज विनम्र श्रंद्धाजलि लेख में प्रकाश डालने का प्रयास कर रहा हूं। हो सकता है कुछ जानकारियां छूट गई हों या मुझे मालूम ही न हो। वे आज हमारे बीच नही हैं। विनम्र नमन है उस युग पुरूष को।

पंथी गीत के गायक; नृत्य के सिरमौर श्री देवदास बचपन से ही गरीबी को बहुत करीब से देखा ही नही भोगा भी था। कुपोषण निर्धनता के कारण पिता की मृत्यु के तीन महिने के शिशु ने अचेतन अवस्था मे ही अनुभव किया है। 1 जनवरी 1947 को आपका जन्म हुआ आपके माता भागवती एवं पिता बोधराय जी थे। पारिवारिक परिस्थितियों के कारण पालन पोषण ग्राम धनोरा मे श्री फूलसिंह बंजारे के घर हुआ। निर्धनता और बीमारी से ग्रसित परिवार में तीन वर्ष की उम्र में "महतारी" ने देवदास की आस ही छोड़ दी थी परन्तु "साहेब" को बड़ा कार्य श्री देवदास से करवाना था सो जिन्दगी ईश्वर ने बक्स दी। दरिद्रता अभावग्रस्तता के बावजूद आपने बी.एस.पी. उच्च.मा.वि.से.-7, भिलाई नगर से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। रोजी मजूरी कर परिवार की जिम्मेदारी निभाते रहे बचपन से ही। जब कक्षा दसवीं के विद्यार्थी थे तब आपकी कला, प्रतिभा को नई दिशा मिली राज्य स्तरीय दौड़ में आपने म.प्र. का मान बढ़ाया यही नही कबड्डी खेल के अच्छे खिलाड़ी भी आप थे राऊलकेला, दुर्गापुर, बोकारो, खड़गपुर, कलकत्ता में उत्कृष्ट कबड्डी खिलाड़ी के रूप में नेतृत्व किया।

1969 में कबड्डी खेलते हुऐ घुटने की कटोरी सरक जाने एवं हड्डी टून जानें से खेल को अलविदा कहना पड़ा। इन्ही दिनों छ.ग. की सांसद मिनीमाता ने आपकी प्रतिभा को पहचान कर बी.एस.पी. में नौकरी हेतु आदेशित किया रीडर की नौकरी मिली। स्व. देवदास बजारे ने बताया कि पंथीगीत की ओर रूझान प्रेरणा उन्हे ''लहरडूंगा नाचपार्टी'' से मिली। कमजोर पांवो को फिर संबल मिला फिर पूरे आत्मविश्वास के साथ माँदर की थाप के साथ चल पड़े नई राह नई मंजिल की ओर। कमजोर पांव को सबल बनाते हुए बुधारू, मंथीर, अग्राहिज, जगदीश, ज़यसिंह और धनुष के नृत्य मंडली में मांदर की थाप घुंघरू की आवाज में शब्द भेदी बाण चलाते सतनाम संदेश को आकाशीय ऊचाईयो में परचम की तरह लहराते हुए गांव धनोरा सें विश्व के 64 देशों में सतनाम का डंका बजाये। पताका लहराये फहराये।

''लहराये हो तोर नाम के निशान
फहराये हो तोर नाम के निशान।
गगन में अहो सत्यनाम
पवन में अहो सत्यनाम॥''

बाबा जी के संदेश को पहले ''खड़ी साज'' में मंगल भजन के रूप में भी प्रस्तुत किया जाता था। किन्तु पंथी की अपनी अलग बानगी शुरू से ही रही है। धीरे-धीरे पंथी गीत नृत्य के रूप में विस्तार होने लगा। प्रारंभ में केवल पुरूष ही पंथीगीत गाते व नाचते थे परन्तु देवदास युग से महिला भी मंच मे स्फूर्ति से नृत्य प्रस्तुत कर रही है। पंथी गीत का व्यापक विस्तार होने लगा है। पंथी सर्वाधिक तेज नृत्य है गोलाकार आकृति के बीच में मंदरहा व गायक होता है जो प्रारंभ मे धीमी गति से आगे बढ़ते हुये नाचते मांदर के साथ लयताल मिलाते हुए बाबा जी के प्रेरणास्पद संदेश को गाकर सुनाते है।

स्व. देवदास बंजारे 35 वर्षों तक पंथी की साधना में लगे रहे प्रदर्शन करके पंथी को विश्वव्यायी बना दिया। विश्व विद्यालीन छात्रों को पंथी गीत नृत्य सिखाये। अनुवादक उन्हें समझाते थे। पंथी नृत्य यात्रा की इस समयावधि मे पंथीगीतो मे सुधार हुआ। पंथी नृत्यों को एक नई दिशा देने मे आपका अविस्मरणीय योगदान रहा है। सन् 1972 से 1976 तक महिला कलाकारो को पंथी के गुर सिखाये। महिला कलाकार चित्रापाल, उषाखरे, स्वर्णलता खरे सहित पंजाब के लुधियाना विश्वविद्यालय के महिला एवं पुरूषो को एक माह तक प्रशिक्षण दिये। तत्कालीन राज्यपाल महोदय ने अपने उद्‌बोधन में कहा था। ''हम तो भांगड़ा को सर्वाधिक तेज नृत्य मानते थे आज सिद्ध हो गया कि विश्व का तेज नृत्य पंथी नृत्य है।''

हमें यहां पुरानिकलाल चेलक को भूल जाना भी न्यायोचित नही होगा। शांति बाई चेलक, उषा बारले, जुगा बाई आदि अनेक महिला कलाकार निर्भीकता पूर्वक तन्मयता के साथ मंचन कर रही है। देवदास जी के प्रमुख गाने जिसे वे पूरी तन्मयता के साथ गाये थे उन्हें या हमें शायद नही मालूम था कि इस कला यात्रा में ज्यादा समय नही बचा है अब विश्राम का समय आने ही वाला है।

ये माटी के काया माटी चोला।
के दिन रहिबे बता दे मोला।।

मुझे वह दिन याद है जब मैं पांचवी कक्षा में पढ़ता था। गांव के स्कूल में टेलिविजन लगा था। उसमें रात में देवदासजी को साथियों के साथ नाचते देख रहा था। बंजारे जी यही गाना राष्ट्रपति भवन में पंथी नृत्य के साथ प्रस्तुत कर रहे थे। तत्पश्चात उसे सम्मानित भी किया गया। शरीर नाशवान है। संदेश पर आधारित गीत बहुत रोचक था जिन्हें सुनकर ईश्वर की ओर मन लग जाता है।

''काकर संग जांव साहेब,
काकर संग आंव
संग के जवईया, संगी कोनो नई हे।

उनका एक प्रसद्धि गीत जिसे प्रायः हर कार्यक्रम में वे गाते थे। मन रोमांचित हो उठता था साहेब की ओर मन आकर्षित हो जाता था।

गुरू कहंवा ला लावंव। आरूग फूलवा

पंथीगायक देवदास जी का सम्मान देश विदेश में हुआ। 25-26 वर्षो की इस यात्रा में कई प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, मुख्यमंत्री, राज्यपाल द्वारा सम्मानित हुए। सतनामी समाज के कई राजनीतिक पुरूष लोग - कैबिनेट मंत्री, सांसद, विधायक व राजनीतिक दल के प्रदेशाध्यक्ष भी रहे-परन्तु किसी ने भी पद्मश्री, पद्म विभूषण जैसे सम्मान और देश का पुरस्कार दिलाने का प्रयास नही किया। सबसे बड़ी बात और क्या हो सकती है कि म.प्र. शासन ने 1996 से गुरूघासीदास दलित चेतना पुरस्कार स्थापित किया। प्रथम पुरस्कार निश्चित रूप से श्री देवदास बंजारे को मिलना था, परन्तु मिला नही। छ.ग. राज्य बनने के पश्चात् सामाजिक दबाव के कारण लम्बे समय पश्चात वर्ष 2000-01 को गुरू घासीदास दलित चेतना पुरस्कार उन्हें मिला। कैसी विडम्बना है, महान सपूतों के साथ क्या यही हमारा सामाजिक दायित्व है।

पंथी नृत्य अध्यात्मिक कला संयोजन, पंथी पुरूष सतनाम प्रचारक की भूमिका में

देवदास जी का नाम सदैव स्मरण किया जावेगा विधि का यह विधान हमें स्वीकार है ।

आए हस हंसा अकेला हो, जाबे तैं अकेला हो संग के जवईया संगी कोनो नईये हो ।।

आइये हम पंथी गायक के 25-26 वर्षों की यात्रा पर क्रमवार तिथिअनुसार एक दृष्टि डालें ।

क्र.	*दिनांक वर्ष*	*महत्वपूर्ण उपलब्धियां*
1.	01-01-1947	ग्राम सांकरा मे जन्म, पिता श्री बोधराय माता श्रीमति भागबती
2.	1964-65	मैट्रिक पास बी.एस.पी. उ.मा.वि. से.7 भिलाई
3.	1965-68	राज्य स्तरीय दौड़ में प्रथम स्थान, राज्य स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता प्रथम स्थान भिलाई, राऊरकेला, कलकत्ता, दुर्गापुर में उत्कृष्ट प्रदर्शन।
4.	1969	बी.एस.पी. में "रीडर मीटर" पद पर नौकरी
5.	1969	पंथी पार्टी का गठन धनोरा में प्रदर्शन प्रेरणा श्रोत - लहरडूंगा नाच पार्टी दल मादर वादक बुधारू
6.	1969-70	गिरोदपुरी मेला मे प्रदर्शन - तत्कालीन मुख्यमंत्री द्वारा सम्मानित
7.	1971-72	प्रथम छत्तीसगढ़ लोककला महोत्सव मे प्रस्तुती
8.	1974	हबीब तनवीर द्वारा निर्देशित नाटक "चोर चरन दास में पंथी नृत्य,गायन, भूमिका।
9.	1975	भारत के राष्ट्रपति महामहिम स्व. फखरूद्दीन अली अहमद द्वारा नई दिल्ली में सम्मानित।
10.	1976	सोवियत संघ में नृत्य प्रदर्शन, राष्ट्रपति गोल्डिव द्वारा सम्मानित
11.	1982	लंदन, एडिन बर्ग, हालैण्ड जर्मनी फांस में प्रदर्शन
12.	1982	अन्तराष्ट्रीय नाट्य स्पर्धा एडिनबर्ग में चोर चरन दास नाटक मे भूमिका गायन साथी, हबीब तनवीर, भुलवा राम यादव
13.	1985	फ्रांस में आकर्षक पंथी नृत्य प्रस्तुत करते हुये बेहोश हो गये। वहां चिकित्सा सेवा पश्चात भारत सरकार ने चिंतित होकर स्वदेश बुलाया।
14.	1990	फांस जर्मनी सोवियत संघ सहित 64 देशों मे पंथी नृत्य प्रस्तुत।
15.	1994	महामहिम राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा द्वारा सम्मानित।
16.	2001	(1) छ.ग. सरकार द्वारा गुरूघासीदास दलित चेतना पुरस्कार (2) सत्यध्वज पत्रिका के सम्पादक श्री दादूलाल जोशी "फरहद" द्वारा देवदास पर केंद्रित ग्रींटिग कार्ड में तथा पत्रिका में आमुख कवर प्रकाशित। (3) बी.एस.पी. द्वारा देवदास बंजारे पर केंन्द्रित ग्रीटिंग कार्ड व कलेन्डर प्रकाशित।
प्रेरणा श्रोत -		पिता श्री फूल सिंह, धर्मपत्नि श्रीमति रामबाई, हबीब तनवीर, बी.एस.पी. के प्रबंधकगण, डॉ. विमल पाठक
-		भिलाई इस्पात संयत्र भिलाई नगर महान युग पुरूष को विनम्र श्रद्धांजलि।

देव+दास = देवदास अंतर्राष्ट्रीय पंथीनर्तक

पी. एल. चेलक की आह !

अमर माह अगस्त की
1947-15 अगस्त आजादी का
1972-11 अगस्त ममतामयी मिनीमाता
2005-26 अगस्त पंथी नर्तक श्री देवदास

(मामा, भांजे का समाधान-मामा की बहन जिस घर में गई थी
उसके जेठ के लिए भांजे की मां गई थी (ग्राम - पोटीया, दुर्ग)
ईनाम की चांह, मिडिया की आशगई, बस नाम रह गया।
टल न सका विधि का विधान, मेरा चंचल चला गया,
आंखो के निर्मल जल से हमारा श्रध्दा सुमन है .
शाम सुबह हर दिलो मे काटे जैसा चुभन है .
आप को सत् सत् नमन है सत् सत् नमन है .
कमर कस कर ठाने थे . सत् के करे प्रचार .
आप देव हम दास . सत् के करे प्रचार .
चाहे बिजली चमके बादल गरजे .
या हो बरसात. सत् के करे प्रचार .
चाहे बाधा आये . जंगल झाड़ी, सागर पाहड़ी.
पर, जाना है उस पार, सत् के करे प्रचार .

-:-

पंथी गीत :- तर्ज पर
(आवत हे गुरू आवत हे, शंख मृदंग बजावत हे.
सोये मन ला जागवत हे, गुरू आवत हे ।)
तर्ज - नाचत हे देवा नाचत हे, झुमर झुमर देवा नाचत हे .
पांवे के घुंघरू बाजत हे, देवा नाचत हे देवा...

1. गांव गली मा नाचत हे .
देश विदेश मा नाचत हे .
जन, जन के मन ला रीझावत हे .
देवा नाचत हे देवा .....

2. झांझ मृदंग बजावत हे .
मीठा राग सुनावत हे .

गुरू के ज्ञान बतावत हे.
देवा नाचत हे देवा .....

3. संगी साथी नचावत हे.
भाई चारा निभावत हे.
जीनगी के भार उतारत हे .
देवा नाचत हे देवा......

4. गांव दूसर मा जनम धरे,
गांव धनोरा मा करम करे
छत्तीसगढ़ ला अमर करे.......
देवा नाचत हे ।

✦ पुरानिक लाल चेलक
पंथी गीत लेखक रेड़ियों सिंगर, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन कलाकर
ग्राम व पोस्ट आलबरस, निकुम, जिला - दुर्ग (छ.ग.)

श्रद्धांजलि पंथी गीत

फेर आहू देवदास जी

अंतर्राष्ट्रीय पंथी नर्तक स्व. श्री देवदास बंजारे को समर्पित

फेर आहू देवदास जी,
फेर आहू देवदास जी,
तोला खोजत हे धरती,
तोर माटी, फेर आहू.....
तोला खोजत हे संगी
तोर साथी,फेर आहू......

घासी बबा माता सफुरा के,
महिमा ल तैं गाये ग, ।
सतनाम के धजा पताका,
दुनिया म फहराये ग, ।।
संग म नाचय बुधारू,
तोर छाती, फेर आहू........

छत्तीसगढ़ के माटी म उपजेव,
गाँव धनोरा के हीरा ग, ।
तोर बिना हम कंगला होगेन,
तन-मन ब्यापे पीरा ग, ।।
आंसू बोहत हे जइसे,
ओरवाती, फेर आहू ......

सत के मारग लामी हावय,
अबड़ दूर हे जाना ग, ।
घुंघरू बांध के पांव म तैं हा,
जगती म फेर आना ग, ।।
आजो आये हवय ग,
तोर पाती, फेर आहू देवदास जी ।

✦ के. आर. मार्कण्डेय, कातुलबोड, दुर्ग

छत्तीसगढ़ी लोक कला के सम्राट स्व. देवदास बंजारे

✦ बंशीलाल जोशी
सिघोला राजनांदगांव (छ.ग.)

पंथी लोककला के माध्यम से संत गुरूघासीदास के मानवोपयोगी सतोपदेशों को विश्व पटल में प्रतिष्ठापति करने, वाले ख्याति प्राप्त महान पंथी नर्तक देवदास बंजारे जी का अकाल, असमय निधन 26 अगस्त 2005 को सड़क दुर्घटना में हो गया। ऐसा लग रहा है कि छत्तीसगढ़ सतनामी समाज रूपी विशाल क्षितीज में उर्जावान प्रकाशवान सूर्य विलुप्त हो गया। परंतु जब तक पंथी नृत्य और गीत गूंजता रहेगा, इस पृथ्वी पर जब तक महान नर्तक की चंचलता और जनेव धारी, घुटने तक धोती धारी, मस्तक में श्वेत चंदन के तिलक धारी, पंथी के माध्यम से सतनाम के महान साधक देवदास सूर्य-चन्द्र की भांति प्रकाश देता रहेगा, विश्व के जनक समुदायो को, ऐसा मेरा मानना है। चाहे कोई माने न माने। सतनामी समाज को विश्व में गौरवान्वित करने का श्रेय महान लोक कला नर्तक देवदास बंजारे जी की झोली में जाता है। इसमें कोई दो मत नही है। प्रातः स्मरणीय एवं पूजनीय गुरू घासीदास की विशेष कृपा एवं आशीर्वाद उन्हे प्राप्त था। अतः उनके मनोमस्तिष्क में शाश्वत सत्य के प्रति श्रद्धाजागृत हुई। उन्ही के शब्दों में

“कहवां ला लानव गुरू,
आरूग फूलवा”
कैसे के चढ़ावंव,
मैं आरूग फुलवा
बाग बगैचा के फूल ला तो,
तितली, भंवरा जुठारे हे।
कहवां ला लानव गुरू
आरूग फुलवा।

इसी पंथी गीत में स्पष्ट झलकता है कि इस दुनियाँ में जितने भी चर अचर वस्तु है वे पदार्थ आरूग नहीं किसी न किसी के द्वारा भोगे गये हैं। इसे पंथी गीत मे चरितार्थ किया गया है।

ये माटी के काया माटी के चोला,
के दिन रहिबे बता दे मोला ॥

इस पंथी गीत के माध्यम से महान नर्तक विभूति देवदास बंजारे जी, जीवधारी शरीर से प्रश्न पूछते हैं कि पंचतत्व से निर्मित शरीर कितने दिनों तक इस दुनियाँ में रहेगा, मुझे बता दे। कहने का तात्पर्य है कि कोई भी शरीर, से कब जीव चला जायेगा ठाठ को छोड़ जायेगा किसी को भी मालुम नहीं रहता है।

इसी प्रकार हृदय विदारक सड़क दुर्घटना में महान नर्तक की चंचलता एवं चपलता विलुप्त हो गयी। नयन उस दृश्य को देखने के लिए तरसता रहेगा। उसे साक्षात देखने का अब अवसर हमे नहीं मिलेगा। सी.डी. फिल्म के माध्यम से टेलिविजन में ही देख सकेगें।

आना जाना विधि का विधान है। कुछ लोग होते है जो कृतित्व, और व्यक्तित्व के माध्यम से कुछ ऐसे कृत्य करके छोड़ जाते है जो सदा सदा के लिए वे वर्ष में जरूर याद किये जाते है। ऐसा प्रयास हो वे साहित्य जगत में विलुप्त न हो जावे। हमारा समाज, उस गौरव पुरूष को याद करे इस प्रकार की भावना रहे। परम पूज्य गुरूघासीदास हमें सद्बुद्धि दे। इसी मनोकामनाओं के साथ ....

गुरूघासीदास और राष्ट्रीय दलित चेतना

(व्याख्यान) ✦ डॉ. विनयकुमार पाठक

गुरूघासीदास जी के योगदान पर बहुत सारे वक्ताओं ने विशेष रूप से विचार व्यक्त किये हैं मैं उनकी पुनरावृत्ति नहीं करना चाहूंगा। लेकिन कुछ बांते जो उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप उभरी है। उसे भी बताना चाहूंगा और ये बताना चाहूंगा कि गुरू घासीदास जी जो छत्तीसगढ़ की संत परम्परा के सर्वाधिक लोकप्रिय जननायक है, गुरू है, संत हैं और जैसा कि एक भाई ने कहा कि वे निर्गुण विचारधारा के संत थे। निश्चित रूप से हमारे यहाँ के जो पंथीगीत है; वो निर्गुणियाँ भजन है और उसमें निर्गुण ब्रम्ह की आराधना ही मुख्य रूप से की गई ; और उनका पूरा जीवन दर्शन आप देखें तो कर्मकाण्ड का एक तरह से विरोध करता है। हमारे यहां कोई भी संत हुआ है; उसे हम किसी वर्ग, समाज या क्षेत्र तक नही देखते है; और उसे उसी रूप मे देखा जाना ही उनका वास्तविक मुल्यांकन होगा। शायद इसीलिए डां. सोनी जी ने संकल्पना की और विषय में भी उन्होंने राष्ट्रीय शब्द जोड़ा है। उसके पीछे भी एक कारण है। यदि हम क्षेत्रीय ढंग से गुरू घासीदास जी का अध्ययन करेंगे और एक जाति या वर्ग विशेष में बांध कर हम गुरू को रखेंगे तो निश्चित रूप से हम उसके कद को उसके सम्मान को, उसके महत्व को कम करेंगें। संत कोई भी हो अपने क्षेत्र में प्रयोग करता है लेकिन एक युग में प्रयोग करने के बाद पूरा युग विद्वेलित होता है, प्रभावित होता है। गुरूघासीदास जी का 250 वर्षो के बाद भी आज हम पूनर्मूल्यांकन क्यों कर रहे है ? एक संत कबीर पंथ के अनुयायी पटु शिष्य धनी धरमदास हुए जिन्होंने दामाखेड़ा में छत्तीसगढ़ी पंथ की स्थापना की और उसमें निर्गुणियाँ होने के बाद भी जो सगुण वृत्ति है उसका समन्वय अधिक मिलता है। लेकिन दूसरी ओर एक क्रांतिकारी संत के रूप में जिन्होंने लोगों के जीवन को सतनाम पंथ से पूरी तरह सात्विक कर दिया और उनके विचार से, चिन्तन से पूरी तरह एक आम आदमी को मानवता वादी बना दिया, जिस ऊंचाई पर हम सिद्ध साधना करके भी नहीं पहुंच पाते। इसलिए गुरूघासीदास जी का जो महत्व है, वह बहुत अधिक है और हम गुरूघासीदास के महत्व को भले ही कुछ लोगों ने कहा कि प्रमाण में साहित्य नहीं है लेकिन मैं कहता हूँ कि संत कबीर का भी कोई साहित्य नहीं था - 'मसिकागज छुवो नहीं कलम गही नही हाथ'' वो भी निरक्षर थे लेकिन उनकी वाणी को उनके बाद के लोगों ने लिखा। ठीक है गुरूघासीदास के संदेशों को पंथी नर्तकों ने गाया, नाचा उनका गुणगान किया। उनके संदेश जिस परम्परा के रूप में हो; आवश्यक नहीं है कि संत पढ़ा लिखा हो, आवश्यक नहीं हैं कि वो खुद कविता लिखे लेकिन उनके जो उपदेश हैं उनको, उनके बहुत बाद की पीढ़ी ने,

पंथीगीत के जो हमारे गायक है उन्होंने भी लिखा और कुछ लोग जो पंथीगीत लिखते है; उन्हें - मैं यहां हर साल आता हूँ - और वे लोग कुछ न कुछ किताबें लिखते हैं - वो हमें मिलती है। दूसरी जगह जाता हूँ वहाँ भी मिलती है। पंथीगीत, रचनाकार लिखते हैं, सम्पादन करते हैं, प्रकाशन करते हैं। इस तरह उसकी पीढ़ीयों ने उसे साहित्य का रूप दिया। ग्रंथ का स्वरूप दिया। तो ठीक इसी तरह बाबा गुरूघासीदास के साहित्य की मौखिक परम्परा को हमारे पंथी लोक नर्तकों ने पंथी लोक गायकों ने एक साहित्य के प्रवाह के रूप में अमृतमय वर्षा दी। वो पंथी दल के नर्तक बहुत कम पढ़े लिखे है और वो इतने बड़े ज्ञान को कैसे बोल सकते थे लिख सकते थे। जो गुरूबाबा के अमृत संदेश हैं उन सबको आज भी आप नही समझ पायेंगे। इससे यह सिद्ध होता है कि वो सब उनके बनाया हुआ नही हैं किसी सिद्ध की कही हुई बाते है और वो सिद्ध पुरूष कोई दूसरा और नहीं , वो केवल गुरू बाबा घासी दास जी थे। हमारे यहां कहा गया है कि वेदों में जो बात कही गई है, पोथी में जो बात कही गई है, वो भी सच है लेकिन मौखिक परम्परा में जो बात कही गई है वो जादा सच है; उसकी उपेक्षा आप नहीं कर सकते। लोक में जो बात रच बस गई है, आप उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते। आज 250 वर्षों बाद भी पंथीगीत की जितनी टोलियाँ है; जितने भी लोग गा रहे हैं और वो नृत्य के रूप में, गीत के रूप में, आध्यात्म चिन्तन विधि से युक्त दर्शन के रूप में और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक बहुत अच्छे छत्तीसगढ़ के प्रतिनिधि लोक गीत-नृत्य के रूप में, आज उसकी स्थापना हो रही है। क्यों हो रही है ? बाबा जी ने जो साधना के द्वारा वो गीत दिये, सूत्र दिये उसका ही परिणाम है कि उसका जो अनुगायन करते हैं, उनको वो लाभ मिलता है और पंथी को विश्व स्तर पर जो लाभ मिल रहा है। निश्चित रूप से आज भाई देवदास बंजारे भी यहाँ उपस्थित थें - बहुत अच्छा लगा उन्हें देखकर। वे छत्तीसगढ़ की माटी के सपूत है। बहुत बड़े लोक कलाकार हैं। मैं उनको बहुत मानता हूं। गुरूघासीदास जी के संदेशों को विश्व में बिना साहित्य लिखे प्रचारित करने वाले वे लोक कलाकार हैं। इसलिए ऐसे लोगों का भी अपना कम महत्व नहीं होता है जो गुरू घासीदास जी के संदेश को काव्य में लिखते है गद्य में लिखते हैं। अपनी भाषा में लिखते हैं। भले वो लेखक नहीं है। संकलनकर्त्ता हैं लेकिन गुरू घासीदास जी के संदेश को अपनी भावना, अपनी शक्ति अपनी बुद्धि अपने तर्क के अनुसार उसे जन-जन तक सम्प्रेषित कर रहे हैं। ये भी बहुत बड़ी बात है। आप देखिए ईशुरी नाम के बुन्देली में एक कवि हुआ उसका कोई साहित्य नहीं रहा लेकिन पूरे बुन्देलखण्ड में उनका गायक बाद में रहा इसीतरह खैरागढ़ में एक नरेश थे आज से सौसाल पहले। उनके नाम से भी फागगीत गाये जाते हैं। कहने का अर्थ है कि इस तरह की

परम्परा हमारे क्षेत्र में, तथा दूसरे प्रदेश में मिलती है। तो हम नहीं कह सकते कि पंथी गीत भी गुरू बाबा घासीदास की रचना नहीं है। निश्चित रूप से ये उनकी रचना है और वे लोक साहित्य के रूप में अमृत तत्व के रूप में हमें उपलब्ध हो रही है। एक बात और कहना चाहूंगा कि मैने रिचर्स में बीस पच्चीस साल बिताएं है तो मुझे मालूम है कि लोक साहित्य में और लोक गीत के रूप में पंथीगीत को अकादमिक महत्व नहीं दिया गया था। मै आपको जानकारी दे रहा हूँ - आप चाहें तो पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के ग्रंथालय में शोधग्रंथ देख लें - सबसे पहले मैनें सन् 1973 में शोध किया तो मुझे कुछ पंथीगीत मिले थे और जो मेरी सीमाथी और जो मेरी दृष्टि थी उस आधार पर मैनें उसको लोक भजन और निर्गुण भजन गुरू घासीदासजी की काव्य रचना के रूप में उसका पहली बार लोकगीतों के विवेचन के रूप में मूल्यांकन किया और उसके बाद जो रिसर्च स्कालर थे और शोध की जो परम्परा थी। उसमें मैने लोगों को प्रेरित किया और बाद में उसमें कई लोगों ने काम किया। कहने का अर्थ यह है कि यदि वो प्रवृत्ति नही होती तो निश्चित रूप से बहुत बाद में जो कार्य होता है तो समय पर उसका मूल्यांकन होता है और गुरूघासीदास जी ने जो अथक साधना से पंथीगीत जो उनका संदेश है वह मिला। निश्चित रूप से वह लोकगीत की परम्परा है। लोक काव्य की परम्परा है। लोक भाषा की परम्परा है। हमारे छत्तीसगढ़ की थाती है और उस परम्परा में, मुझे बहुत खुशी हो रही है - नये नये प्रकार के प्रयोग हो रहें हैं। जैसा कि एक भाई ने कहा कि गुरूघासीदास जी एक पटु कृषि वैज्ञानिक थे और उनकी व्याख्या बहुत सटीक है। उस तरह की नई दृष्टि होनी चाहिए। उनके जो संदेश है, उपदेश है - उनका पूनर्मूल्यांकन का कार्य हमें करना चाहिए और आधुनिक दृष्टि से गुरूघासीदास के संदेश कितनी दूर तक जा सकते हैं, वो भी हमें देखना चाहिए। उन्होंने समरसत्ता का सिद्धांत दिया और छत्तीसगढ़ की संस्कृति भी समरसत्ता वादी संस्कृति है। तो इन दोनों बातों को मिलाकर यदि हम गुरूघासीदास के महत्व को ग्रहण करें। निश्चित रूप से दलित चेतना की बात तो हिन्दी विमर्श में अम्बेडकर साहित्य के बाद आई। महाराष्ट्र में उस चेतना का प्रवर्तन हुआ है - फैलाव भी हुआ है लेकिन छत्तीसगढ़ में वो बात देखने को नहीं मिलती है लेकिन बीज के रूप में सूत्र के रूप में यदि हम चाहे तो उस रूप में भी गुरूघासीदास का मूल्यांकन कर सकते हैं। कहने का अर्थ यह है कि वो एक भाग है; वो सर्वस्व नही है सर्वस्व के केन्द्र में है ; उनकी राष्ट्रीय छवि और उस राष्ट्रीय छवि को हमें बचाये रखना होगा। बनाये रखना होगा तभी यह संगोष्ठी सार्थक होगी।

(गुरूघासीदास साहित्य एवं संस्कृति अकादमी रायपुर द्वारा दिनांक 15-12-2003 को राजेन्द्र नगर रायपुर में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में दिया गया अध्यक्षीय भाषण के अंश)

दलितों को उनका हक मिलना चाहिए

(व्याख्यान)

✦ **अजीत जोगी,** प्रथममुख्यमंत्री छ.ग.
एवं वर्तमान सांसद महासमुंद

अध्यक्ष श्री नरसिंह मंडल जी, उपाध्यक्ष श्री गहिने जी, महासचिव डॉ. सोनी जी कोषाध्यक्ष श्री खण्डे जी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री रेशमलाल जांगड़े जी श्रीरामप्रसाद कोशरिया जी, छत्तीसगढ़ के गौरव दो महान विभूतियाँ :- जिनका हम लोगों ने अभी सम्मान किया, भाई श्री देवदास बंजारे व बहन श्रीमती सूरूज बाई खाण्डे, हमारे छत्तीसगढ़ के सृजनकर्त्ता सम्मानित साहित्यकार, कवि, लेखकगण। यहाँ उपस्थित देवियों और सज्जनों।

यह एक ऐसा प्रसंग है, संदर्भ है, जहाँ मुझ जैसे व्यक्ति को अधिक नहीं कहना चाहिए। साहित्य का सरोकार सृजनकर्त्ताओं से होता है। साहित्य में हम जानते हैं - समाज का दर्पण है - और जब दलित साहित्य की बात हो रही है - विद्वान लोग हमारे बीच उपस्थित हैं - हम उन्हें सुनेंगे, उनसे कुछ सीखेंगे। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि आज ये गोष्ठी दिन भर चली। साहित्य को कैसे किस दिशा में और किस तरह ले जाना है, इस पर आप लोगों ने गंभीरता से विचार अवश्य किया होगा।

मैं तो हासिये पर बैठा व्यक्ति हूँ। दूर से आप के सृजन को देखता हूँ निहारता हूँ। ऐसे व्यक्ति के रूप में मैं केवल एक ही निवेदन कर सकता हूँ। साहित्य उसमें भी दलित साहित्य एक ऐसा क्षेत्र - एक ऐसा प्रसंग है - जहाँ सृजन होते रहता है, वहाँ बहुत कुछ करने की जरूरत है- आवश्यकता है। दलितों से सम्बन्धित, आदिवासियों से सम्बन्धित, छत्तीसगढ़ से सम्बन्धित विषयों के साथ दुर्भाग्यवश - मैं किसी पर आरोप नहीं लगाना चाहता - बुद्धिजीवयों ने, साहित्यकारों ने, कवियों ने, इतिहासकारों ने न्याय नहीं किया। अब आवश्यकता इस बात की है कि जो लोग इस प्रसंग से जुड़ गये हैं - वे सामने आकर इस दलित वर्ग को वंचित वर्ग को और पिछड़े वर्ग को न्यायदिलाएं। न्याय न तो हमारी महान् विभूतियों के साथ हुआ है, उनके त्याग और बलिदान के साथ हुआ है और न ही उनके चिन्तन और दर्शन के साथ हुआ है। जब मैं कोई लेख पढ़ता हूँ जिसमें ये लिखा रहता है कि बाबा गुरू घासीदास जी कहीं और से संभवतः - मैं नाम नहीं लूंगा - किसी अन्य महात्मा के सम्पर्क में आए। उनसे उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई और फिर आकर यहां प्रचार-प्रसार किया। यहीं नहीं ये दस बीस, पचास, साल पहले लिखा गया। ये लेख मैंने पिछले वर्ष गुरूघासीदास

जंयती के अवसर पर यहाँ के प्रमुख दैनिक में पढ़ा, मुझे बड़ी पीड़ा हुई वेदना हुई कि ये सत्य नहीं है। गुरूघासीदास जी ने जिस चिन्तन,दर्शन, धर्म का शुभारंभ किया। उसके ज्ञान की प्राप्ति उनको किसी और से नहीं हुई । ये कहकर कि उन्होंने किसी और से दीक्षा ली - उनके कद को, उनके व्यक्तित्व, को उनके योगदान को कम करने की झूठी और गलत कोशिश की गई।

सही चीजें उनके बारे में आज भी (कुछ क्षण के लिए कैमरा बंद रहा प्रस्तुत संदर्भ शहीद वीर नारायण सिंह पर है) - तभी मैं स्पष्ट कर रहा हूँ। हम उनको एक तरफ शहीद कह रहे हैं और दूसरी तरफ एक लम्बा चौड़ा लिखकर बांटा जा रहा है कि न तो वे शहीद थे, न तो वीर थे बल्कि वो एक लुटेरे थे। वे बड़े व्यापारियों को बड़े किसानों को लूटा - उनके धान, उनके चांवल लूटकर गरीबों में बांट दिया। ये इतिहास नहीं है। ये सच नहीं है। अपने अपने चश्में से लोग इतिहास को देखते हैं। लोग साहित्य की रचना करते हैं। लोग अतिरिक्त वर्णन करते हैं। बलिदान को शहादत को कम आंकते है। ये अभी तक हुआ। इसलिए ये किसी को अच्छा लगे या न लगे। मैं सोचता हूँ यदि हम दलित साहित्य की चर्चा कर रहे हैं तो हमें इस चुनौती को स्वीकार करना पड़ेगा (तालियाँ) हम नहीं चाहते कि अतिशय रूप से, अतिरेक रूप से बढ़ाचढ़ाकर किसी प्रसंग को किसी व्यक्ति के योगदान को प्रस्तुत किया जाय लेकिन हम यह अवश्य चाहते हैं कि जो सत्य है, उसका अन्वेषण हो, उसकी खोज हो और वो सच सही रूप में सही परिदृश्य में लोगों के सामने आये। मैं तो एक ही उदाहरण दिया हूँ। समय रहता तो मैं ऐसे सैकड़ो उदाहरण दे सकता हूँ, जहां लोगों के साथ बुद्धिजीवियों ने, साहित्यकारों ने, विशेषकर इतिहासकारों ने न्याय नहीं किया। अब जब सृजन करने, दलित साहित्य का सृजन करने केवल दलित नहीं - मैं देख रहा हूँ हर वर्ग के लोग उसमें अपना योगदान देना चाहते हैं, तो ये आवश्यक हैं कि हम उसकी गंभीरता को समझें और कम से कम ऐसा तो करें कि जो सच है, जो सही है, जो वास्तविकता है। वह लोगों के सामने आये। उसके लिए श्रम करना पड़ेगा। उसके लिए खोज करनी पड़ेगी। उसके लिए इतिहास और अतीत में खो जाना पड़ेगा, ढूंढ़ना पड़ेगा निकालना पड़ेगा और ये सब बहुत बड़ी चुनौती का काम है। मुझे पूरी उम्मीद है, आशा है, विश्वास है कि जो लोग अब दलित चिन्तन से, दलित दर्शन से दलित साहित्य से जुड़ रहे हैं वे इस पहलू का अवश्य ध्यान रखेंगे और उस न्याय को जिन्हें न्याय मिलना चाहिए उसे न्याय दिलाने में कोई कसर नहीं छोड़ेगे।

समाज निरंतर अविराम अधिक बदलता रहता है। समाज में वंचित वर्ग की दलित वर्ग की स्थिति लगातार बदल रही है। जो साहित्यकार ये दावा करते हैं कि वो दलित

साहित्य का सृजन कर रहे हैं। उनके लिए एक दूसरी बड़ी चुनौती है कि इस बदलते परिवेश में दलितों का जो संघर्ष है। दलितों की जो आशा है, दलितों की जो आकांक्षा है, दलितों की जो अपेक्षा है उसे - साहित्य की जिस विधा से जुड़े है; उस विधा के माध्यम से समाज के सामने लायें। आज का दलित, आज का वंचित, आज का आदिवासी, आज का पिछड़ा - ये अपेक्षा नहीं करता कि उसे जो उसका हक है; उससे ज्यादा दिया जाये। पर वो ये अपेक्षा जरूर करता है कि जो उसका अधिकार है वो उसे मिले। वो तभी मिल सकता है जब समाज का बुद्धिजीवीं समाज का साहित्यकार हमारा कवि, जो हम सबकी मानसिकता को बनाते है; जिनको सुनकर, पढ़कर हमारा सोच बनता है, तय होता है। वे लोग आगे बढ़कर जैसी इस समाज की अपेक्षा है ; जैसी इस समाज की आकांक्षा है और जैसा इस समाज का हक बनता है उसके अनुरूप सृजन करें। सबके समक्ष पेश करें और समाज में समरसत्ता, एक रूपता, समानता या फिर समग्र समाज को एक मुख्य धारा में लाकर एक साथ खड़ा करें। हम सब एक साथ हो जाएं। समता, समानता और समरसत्ता के सूत्र में हमको बांधलें। ये काम हम अगर चाहें कि आज का राजनैतिक व्यक्तित्व कर देगा तो ये संभव नहीं है। आज का शासन या प्रशासन करेगा वह भी संभव नही है, मैं ये मानता हूँ कि जब हम ऐसे परिवर्तन के बारे में सोच रहें हैं। ऐसा परिवर्तन जो बुनियादी परिवर्तन होगा - जो मौलिक परिवर्तन होगा जो आज तक समाज में होता आया है, उससे अलग, उससे भिन्न करने के लिए हम उत्प्रेरित करें। इस तरह के परिवर्तन - और उस परिवर्तन का सबसे शसक्त वाहन साहित्य ही बन सकता है। कविता ही बन सकती है। रचनाकार ही बन सकता है। आप उस परिवर्तन के सशक्त वाहन हैं। आपसे हम सबकी अपेक्षाएं हैं। मैं शुभ कामनाएं देता हूँ कि दूसरों की अपेक्षा आपके सामने ज़ो चुनौती है वह बहुत बड़ी है। हिमालय से भी ऊंची बड़ी अडिग चुनौती है। पर किसी न किसी को तो इस चुनौती का सामना करना ही है। हमारी पीढ़ी को उत्तर दायित्य मिला है। इसीलिए हमारी पीढ़ी उस चुनौती का सामना कर रही है और सफल तो वही होता है। इतिहास उसे ही याद करता है समाज उसे ही स्मरण करता है; जो जब चुनौतियाँ आए तो चुनौती को अवसर में परिणित कर देता है। हम सब इस चुनौती को स्वीकार करें। इस चुनौती को अवसर में बदलें और अवसर का लाभ लेके वंचित के लिए दलित वर्ग के लिए और कुछ नहीं तो उसको जो मिलना है। उसे जो न्याय मिलना है वो जरुर करें। ऐसी मेरी शुभेच्छा है। ऐसी मेरी कामना है। ऐसी मेरी आशा है। मै सदा से ही इस अवसर पर बोलने के योग्य नहीं हूँ मै जो कि स्वयं कोई साहित्यकार नही हूं, मै स्वयं कोई बुद्धिजीवी नहीं हूँ। पर सृजनकर्त्ता हर मनुष्य

में उसका कोई न कोई अंश होता है। साहित्यकार मे अधिक होता है। हम लोगों में कम है पर हम लोगों में थोड़ा तो है ही। इसीलिए सृजन का आवाहन है कुछ न्याय करने का आवाहन है। चुनौती को स्वीकार करने और उसे अवसर में बदलने का आवाहन है और मुझे भी पूरी उम्मीद है कि मुझ जैसे हासिये पर खड़े हुए व्यक्ति ने - आप लोगों का यदि आवाहन किया है तो आप लोग उस चुनौती को जरूर स्वीकार करके इस वर्ग के साथ जरूर न्याय करेगें। आपको मेरी शुभकामनाएं / धन्यवाद / जय छत्तीसगढ़ / जय सतनाम

(गुरूघासीदास साहित्य एवं संस्कृति अकादमी द्वारा दिनांक 15.12.2002 को राजेन्द्र नगर रायपुर में आयोजित ''सतनामी एवं दलित साहित्य सम्मेलन'' में मुख्य अतिथि के रूप में दिये गये भाषण का अंश।)

क्यों नाच रहा है देवदास !

जब धरती थरथराती है
तब लगता है
कि कहीं नाच रहा है देवदास
अपने गणों के साथ।
देवदास क्यों नाच रहा है
अपने गणों के साथ ?
क्या किसी ने
छत्तीसगढ़ की माटी को छेड़ा है ?
क्या किसी ने
छत्तीसगढ़ की अस्मिता को गाली दी है ?
क्या किसी ने
छत्तीसगढ़ के स्वाभिमान को ललकारा है ?
शायद !
आहत है देवदास —
तभी तो वह नाच रहा है
अपने समूचे अस्तित्व के साथ
ताकि डगमगा सके
उन पहाड़ो का आसन
जो लदे हैं छाती पर
छत्तीसगढ़ के
और कर रहे हैं
रावण की तरह शासन।

✦ हरि ठाकुर
''आरूग फूल'' पुस्तक की भूमिका से

पंथी नर्तक स्व. देवदास बंजारे : छत्तीसगढ़ी कला - गगन का ध्रुवतारा

✦ **श्रीमती कुसुमवर्मा 'नूतन'** भिलाई नगर

दर्शक एवं श्रोता से मुखातिब होना कलाकार की सब से बड़ी चुनौती है, कलाकार के लिए और भी ज्यादा सहृदय दर्शक हो या श्रोता अपनी संवेदना संजोये रहता है, अपने संस्कारों को सहेजे रहता है, कलाकार भी अपनी अनुभूतियों को श्रोता और दर्शक के अन्तस तक ले जाकर वहाँ स्थापित करना चाहता है। गीतों की लय लहरियों के माध्यम से कला प्रवाह बनती है। इस प्रवाह में न आडम्बर चाहिए और न पराश्रय। एक नौका, दो यात्री, एक-एक नौका, दो-दो यात्री, असंख्य नौकाएँ असंख्य यात्री। पंथी उसी नर्तक देवदास बंजारे की प्रवाह - यात्रा का सिंहावलोकरन है और स्व. बंजारे जी उस यात्रा के प्रवीण यात्री के अद्‌भूत मिसाल थे। वे श्रेष्ठ कलाकार थे, वे ताउम्र पंथी के नर्तक के रूप में पंथी नृत्य की अनेक संभावनाओं को जन्म देने जूझते रहे, इसी से उनकी पंथी नृत्य की कलाएं विश्व के नये आकाश में उड़ान भरती हैं। संभावनाओं को अपने में समेटे हुए स्व. देव दास बंजारे ने अपनी कला को संसार के क्षितिज तक पहुंचाया, इसीलिए वे अनंत शक्ति सम्पन्न व्यक्ति के अलावा एक ओजस्वी व्यक्तित्व का नाम भी हैं। ऐसे ही व्यक्तित्व के लिए भर्तृहरि ने यह पंक्ति लिखी है -

"जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वरः।
नास्ति येषां यशः काये जरामरणं भयम् ॥"

स्व. देवदास बंजारे की कला की विश्व में अलग पहचान है, जिसको उन्होंने स्वयं दिया है। उनकी मेधा, संघर्ष की आग में जलकर कुन्दन बनी है। निरन्तर, अनथक दुर्धर्ष परिश्रम से उन्होंने अनुभव के मोती बटोरे थे इतिहास, संस्कृति और कला को समझने बुझने के सूत्र संग्रहित किये थे उन्होंने अल्प समय में अधिक कार्य किये। अधैर्य, जल्दी बाजी और कुछ समय में सब कुछ समेट लेने की, अदम्य इच्छा, निष्कर्ष पर पहुँचने की त्वरित कामना, अपनीकला के मूल्यांकन केलिए समय नहीं देता। यह जटिल काम उनके जिम्मे है जो उनकी कलाओं का प्रकाशन करना चाहते है; क्योंकि प्रकाशन की प्रकृति तटस्थ और निर्मम होती है। यह तटस्थता उसे एकांगी और मोहासक्त नहीं बनने देती। निर्ममता उसे और ज्यादा से ज्यादा तर्कनिष्ठ, यथार्थ प्रेमी और सत्यानुरागी बनाती है।

उनकी कला सांस्कृतिक परंपरा विरासत की अमूल्य थाती है। एक ऐसा धरोहर जो जीवन के सुखान्त और दुखान्त के विलक्षण मे अपना स्वरूप ले लिया करती है। वह असमतल बहुरेखीय और एक साथ अनेक दिशाओं से उच्च शीर्ष की ओर उठने वाली लहरों की तरह है। पंथी कला को उच्च शिखर तक ले जाने के लिए स्व. श्री देवदास बंजारे जी ने जो अथक प्रयास किया वह स्तुत्य है। इस सारस्वत जटिल साधना के लिए वे सांस्कृतिक जगत में सदैव अमर रहेंगे। उनकी साधना का फल यह हुआ कि पंथी नृत्य की क्रियाशील शक्ति को नयी दृष्टि मिली। उन्होने कला के बुनियादी तत्व को अपने पंथी नृत्य और पंथी गीत में स्थापति किया है। उनकी कला में गीत और और नृत्य दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। जो अंचल की कला को देश काल के इतिहास और भूगोल से अविरल जोड़ती है। उनके सामने से गुजरती अंचल की कला के केन्द्र है। परम्परा और संस्कृति से लेकर लोक जीवन तक की संवेदना को समेटे हुए ये कलाकार जीवन - जगत के मर्म को अपने अन्तः करण में आत्मसात किये हुए हैं। स्व. बंजारे जी ने कला के अतल सागर में गोतालगा कर 'पंथी' रूपी मुक्ता को सर्जनात्मक ढ़ंग से देश-विदेश में प्रस्तुत किया है। सच में देवदास बंजारे छत्तीसगढ़ी लोकमंच के एक ऐसे दैदीप्यमान सितारे थे, जिन्होंने पंथी को लोक प्रिय बनाकर लोक मानस में स्थापित किया है, इस पंथी शिल्पी की सृजन - यात्रा प्रेरक और रोचक है। वे छत्तीसगढ़ी लोककला गगन के ध्रुवतारा हैं।

ग्राम सांकरा सहसील धमतरी जिला रायपुर छत्तीसगढ़ अंचल का एक हिस्सा है, जहाँ एक जनवरी 1947 को महान कला शिल्पी ने जन्म लिया। प्रकृति के क्रूर चक्र ने बचपन में ही पिता के वात्सल्य को छीन लिया। माँ भागबती को अपना घर छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा और आकर धनोरा ग्राम में बसना पड़ा। पिता के रूप में फूल सिंह ने परवरिश किया। रिसाली प्रायमरी स्कूल से प्राथमिक शिक्षा लेने के बाद बी.एस.पी. सेक्टर-7 स्कूल में 8वीं पढ़ते हुए ही वे दौड़ और कबड्डी के प्रांतीय स्तर के खिलाड़ी बने। 1975 में प्रथम छत्तीसगढ़ लोककला महोत्सव में जादुई प्रस्तुति के बाद उन्होंने इसीसाल पहली बार दिल्ली में राष्ट्रपति भवन में कार्यक्रम दिया। 1976 में वे सोवियत संघ गए। 1982 में उन्होंने भारत महोत्सव में लंदन एडिन बर्ग, हेम्वर्ग, हालैंड, जर्मनी फ्रांस की यात्रा की और कई बड़े अन्तर्राष्ट्रीय मंचों में उनकी प्रस्तुति से देवदास बंजारे की ख्याति पूरे विश्व में फैल गई। 64 विदेशी मंचों पर अपनी कला का जादू बिखेर कर उन्होंने अपनी मधुर आवाज और नयनभिराम नृत्य से पंथी को लोकरंजक बनाने में अहम भूमिका निभायी।

गुरूघासीदास के संदेश से ओत-प्रोत उनके सुरीले पंथी गीतों व मांदर की मधुर आवाज पर वे स हकलाकारों के साथ इतना तेज नृत्य करते थे कि दर्शक मंत्रमुग्ध हो जाते थे। उनका नृत्य देख कर पंजाब के राज्यपाल श्री सुखविन्दर सिंह ने कहा था "हम तो अब तक भांगड़ा को ही सेर मानते थे पर अब पता चला कि पंथी तो सवा सेर है। लोकमंच के मर्मज्ञ डॉ विनय कुमार पाठक जी लिखते है - "नाचा" छत्तीसगढ़ का सर्वाधिक लोकप्रिय, लोकनाट्य है। लोकमंच है, जो विशेषताओं से आपूरित गीत संगीत और कला तत्वों से जन-मन को आकर्षित ही नहीं अपितु अभिभूत भी करता है।

यह बात तय है कि हमारा छत्तीसगढ़ अंचल विकलता और विपुलता का अद्भूत समिश्रण है। धूप छांव भरे इस अंचल की भिन्न-भिन्न अभिव्यक्ति कला के मंच से और अन्य माध्यमों से होती रही है। यह यथार्थ तथ्य है कि पंथी नर्तक देवदास बंजारे की मनोमुग्धकारी लोक मंचीय प्रस्तुतियों की शान और पहिचान पूरे संसार में कायम रहेगी।" अंत में बंजारे जी का यह कलात्मक हूनर व्यक्ति और समाज-सापेक्षता के कारण उन्हें अमर बना दिया है। वे कला संस्कृति के जमेबर्फ को पिघला कर जन संस्कृति की धारा के रूप में प्रवाहित किये हैं। कहना होगा कि आज समूचे छत्तीसगढ़ अंचल में पंथी नृत्य को प्रतिष्ठित करने का श्रेय यदि किसी को दिया जा सकता है तो वह व्यक्ति और कोई नहीं केवल स्व. देवदास बंजारे ही हो सकते हैं। जिन्होंने पंथी गीत और पंथी नृत्य को प्रतिष्ठा दिलाने की आजीवन कोशिश करते रहे।

स्व.देवदास बंजारे जी अपनी विदेशी प्रशंसिका के साथ - स्थान फ्रांस

आधुनिक पंथी की गंगा प्रवाहित करने वाले भगीरथ - स्व. देवदास बंजारे

✦ डॉ. सन्तराम देशमुख 'विमल'

अपराजेय कला - शिल्पी देवदास बंजारे का जन्म अपनी आदर्श परंपराओं और संस्कारों के धानी व सदभावना का टापू छत्तीसगढ़ के ग्राम सांकरा तहसील-धमतरी, जिला - रायपुर में 1 जनवरी 1947 में हुआ। पिता का नाम श्री बोधराय गेंडरें और माता का श्रीमती भागवती थी।

यह टापू भारतीय परम्परा को अपनाता है और सामाजिक समरसत्ता दूसरा आदर्श है। आदि से अपनी इस परंपरा की आस्था यह धरती अपनी ममता के आंचल में समेटे सपूतों को आगोश में लेकर उन्हें प्यार देती है और मर्यादा को सिखाती है। उनके अंतस को भाषा साहित्य, संस्कृति और कला के रंग से रंगती है। कला में प्रवीण श्री देवदास बंजारे को इस अंचल में आज कौन है - जो नहीं जानता। वे पंथी कला, में निष्णात थे। लेकिन उनकी विलक्षण प्रतिभा का आयाम पंथी नृत्य से ही खुला। पंथी नृत्य उनकी अदभुत साधना थी और पंथी नृत्य-गीत जन-जीवन को जागृत करने का साध्य। साध्य और साधन की समान शुचिता को वरण करने वाले विराट व्यक्तित्व का नाम देवदास बंजारे था। जिसके लिए उन्होंने अपने जीते जी पंथी को विश्व के उतुंग शिखर तक पहुंचाने में अग्रणी रहे। नर्तक के रूप में कई कई आयामों में पंथी को प्रस्तुत किया। किसी वस्तु के जितने अधिक आयाम होंगे और वे आयाम उस वस्तु के पूर्णता के संबंध में जिनते ज्यादा संगत और मुखर, वह वस्तु उतनी ही अधिक आकृतिवान, मूर्त और सुंदर होती है और वह विश्व का सिरमौर बन जाता है। उस सिरमौर का अधिष्ठाता स्व. देवदास बंजारे ही है, अन्य और कोई नहीं।

कला और जीवन में हमेशा समान अंतर होता है अर्थात् समानान्तर गति करता है। कला तभी सार्थक मानी जाती है जब यथार्थ और युग बोध से जुड़ी होती है। युग के उतार-चढ़ाव का प्रति दर्शन कराने वाली कला ही दीर्घजीवी और कालजयी बनती है। यह कथ्य प्रत्येक कला के साथ युक्त है। छत्तीसगढ़ की कला पंथी नृत्य ने भी छत्तीसगढ़ की धरती के जन-जीवन और दर्शन को शुरू से ही नयी-दृष्टि दी है। कला और जीवन दोनों के साथ लोगों की सुरूचि से सम्बन्ध होता है। यह सुरूचि - सम्पन्नता ही आरंभ से समाज की सौन्दर्य परकता है जो कि विचार, दर्शन,जीवन-दृष्टि, आशा, आस्था संकल्प इत्यादि सभी में समाविष्ट हो जाती है।

हर युग में मानव ने कला के विषय में चिंतन-मनन किया है। यह अलग बात है कि कला के माप-तौल प्रत्येक युग में समय के अनुसार परिवर्तित हुये हैं। किसी युग में कलाकारों ने दृश्य सौन्दर्य पर बल दिशा तो किसी ने एन्द्रिक सौंदर्य पर बल दिया। उन्हीं

मानव में एक मानव देवदास बंजारे हैं, जिन्होंने पंथी नृत्य के माध्यम से कला का शंखनाद किया। इस कलाकार के चिंतन में दिन रात अंचल, लोक कला, लोक नृत्य, लोक संस्कृति, लोक गीत - पंथी के उन्नयन, संवर्धन एवं परिष्कार की ज्वाला धधकती रहती थी। आज पंथी नृत्य और पंथी गीत की विश्वव्यापी क्षितिज विराजमान है। उनकी भगीरथ प्रयत्न का परिणाम है। छात्र जीवन में ही वे कक्षा आठवीं से दौड़ और कबड्ड़ी के प्रांतीय स्तर के खिलाड़ी के रूप में प्रस्तुत हुए। और हाई स्कूल में वे प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चुने गये। मैट्रिक की परीक्षा उतीर्ण करने के उपरान्त और दौड़ में चैम्पियन बनने के बाद तकदीर ने करवट बदली, तिनके को सहारा मिला नौकरी का। 1969 में भिलाई इस्पात संयंत्र में नौकरी मिली। इस दर म्यान उनका विवाह श्रीमती रामबाई से होने के बाद वे पिता बन चुके थे। सोचा अच्छी जिन्दगी जीने का दिन आया है लेकिन तकदीर के लिखे का किसको पता एकाएक उन पर मुसीबतों का गाज बरपा। दुर्गापुर में आयोजित प्रतियोगिता में पैर फैक्चर हो गया। किसी भी तरह पाँव ठीक हुआ लेकिन खेल जगत से विरक्त हो गया और यहीं से कला की यात्रा शुरू किया। होनहार व्यक्तित्व को कहाँ स्थान नहीं मिलता। जिन खोदा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ। कला के मोती को चुना और पिरोया। पंथी नर्तक के रूप में अंतराष्ट्रीय आकाश में कला के धूमकेतु बनकर चमकने लगे। 1970 में गिरौदपुरी मेले में पूर्वमुख्यमंत्री श्यामचरण शुक्ल ने उन्हें स्वर्ण कमल सम्मान से नवाजा। राही को चलना होता है, पीछे मुड़कर कहाँ देखता है। बस कदम डगर-दर-डगर बढ़ता जाता है। 1975 में प्रथम छत्तीसगढ़ लोककला महोत्सव में जादुई प्रस्तुति के पश्चात् उन्हें पहली बार राष्ट्रपति भवन दिल्ली में पंथी नृत्य प्रदर्शन के लिए आमंत्रित किया गया। मांदर की थाप और नृत्य को देख राष्ट्रपति महामहिम फखरूद्दीन अली अहमद मुग्ध होकर बतौर उपहार चांदी के कप प्रदान किए। 1976 में वे सोवियत संघ अपनी कला के प्रदर्शन के लिए गए जहाँ उन्होंने राष्ट्रपति गोल्डिन के समक्ष पंथीनृत्य प्रस्तुत किया। फिर 1982 में उन्होंने भारत महोत्सव में लंदन, एडिन वर्ग कार्डिफ हेम्बर्ग, गेट होलें, जर्मनी, फ्रांस के कई बड़े महानगरों में पंथीनृत्य प्रस्तुत किये। 22 अगस्त 1982 को एडिन बर्ग अतर्राष्ट्रीय नाट्य स्पर्धा में देवदास की कीर्ति पूरे विश्व में फैल गई। देवदास पंथी के ऐसे शिल्पी थे जिन्होंने पारंपरिक पंथी को आधुनिक स्वरूप का जामा पहनाया। 64 विदेशी मंचों पर अपनी कला का जादू दिखाकर अपनी मधुर आवाज और मोहक नृत्य से पंथी को लोक रंजक बनाने में अहम् भूमिका निभायी। विदेशों में उनके पंथी नृत्य की दीवानगी का एक अदभुत आलम था। उन्होंने सैकड़ो बच्चों को भी पंथी की तालिम दी। मौलिकता और सृजनात्मकता पंथी नर्तक देवदास बंजारे की विशेषता थी। पंथी नृत्य को लोकरंजक बनाने के लिए उन्होंने इसमें अनेक अभिनव प्रयोग किए। अपने अनुपम अवदानों से अंतहीन देवदास बंजारे अंचल की कला के गगन में आज ध्रुव तारे

की तरह अटल है।

इस धरती पर अनेक लोग आते हैं और अपनी कला का प्रदर्शन कर चले जाते है लेकिन कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जो अपनी लगन और निष्ठा से ऐसा काम कर जाते हैं कि जिन पर सारी मानवता गौरवान्वित होती है। छत्तीसगढ़ अंचल में भी साधना के अनेक क्षेत्र रहे हैं जिनमें अनेक साधकों ने अपना-अपना जीवन समर्पित कर दिया है इन विविध क्षेत्रों में छत्तीसगढ़ लोककला में पंथीनृत्य भी एक ऐसा क्षेत्र है, जो अपने परिष्कार और परिवर्धन के लिए सदैव एक साधक की प्रतीक्षा करता रहा है। इसे ईश्वर की अनुकंपा ही कहा जाना चाहिए जो धनोरा ग्राम के श्री फूलसिंह बंजारे के लालन-पालन में देवदास बंजारे ने फला-फूला जो पंथी के सुसंकृत होकर पंथी-गीत एवं नृत्य में एवं उनके उत्थान में जीवन को अर्पित कर दिया।

इस तरह देवदास बंजारे किसी व्यक्ति का नाम नहीं, छत्तीसगढ़ के पंथी नृत्य का प्रतीक हैं। वे समूचे कला आंदोलन के पर्याय थे। अपने नृत्य के माध्यम से उन्होनें कला चेतना दिया। उन्होंने कला-संस्कृति की ही साधना में जीवन बिता दिया। मैं अपने संपूर्ण भावों से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

- तीस साल पहले का समाचार (5 अप्रैल 1975)

दिल्ली में छत्तीसगढ़ी नाचा की मुक्त-कंठ प्रशन्सा

अभी हाल ही में भिलाई से दिल्ली गए छत्तीसगढ़ी नाचा दल ने अत्यंत ही लोकप्रिय लोकनृत्य - पंथी नाचा का प्रदर्शन कर दिल्ली मे बहुत ख्याति अर्जित की। भारत सोवियत सहयोग की 20 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में 'सेल समाचार' के एक विशेषांक का 21 मार्च 1975 को भारत के राष्ट्रपति श्री फखरूद्दीन अली अहमद ने विमोचन किया। इसी विमोचन समारोह में छत्तीसगढ़ी नाचा ने दिल्ली के प्रबुद्ध वर्ग पर अपनी विशिष्टता की छाप लगा दी।

पंथी नाच की विशेषता है - लय बद्धता के साथ-साथ पौरूष एवं उल्लास का प्रदर्शन। गुरू घासीदास के रहस्यमय उपदेशों को तथा उनके इत्तवृत्त को पंथी गीतों में पिरोया जाता है। इस पंथी नाचा दल का सर्वाधिक चर्चित प्रदर्शन 2 फरवरी 1975 को भिलाई के नेहरू सांस्कृतिक भवन में भारत-सोवियत सहयोग की 20 वीं वर्षगांठ समारोह के अवसर पर सम्पन्न हुआ। जिन किन्ही ने यह प्रदर्शन देखा है उनकी जुबान पर अब पंथी नाचा केलिए प्रशंसा ही प्रशंसा है।

दिल्ली के अनेक प्रर्दशनों में दर्शकों ने इस मंडली को काफी उत्साहित-प्रोत्साहित किया। कु. चित्रा पॉल नाचा दल के निर्देशक देवदास, मांदल वादक बुधारू जगदीश प्रसाद ने विशेष रूप से राष्ट्रपति महोदय, इस्पात एवं खान मंत्री थी चंद्रजीत यादव और भारतीय इस्पात प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री एम.ए.वदूद खान की हार्दिक प्रशंसायें अर्जित की।

बेगम अहमद ने नाचा दल के सभी सदस्यों को पुरस्कृत किया और उपरोक्त तीनों कलाकारों को व्यक्तिगत रूप से शुभकामनाएं भी सौंपी।

इस नाचा दल के साथ थीं श्रीमती मंजुला दासगुप्ता और श्री चंदन दास गुप्ता। उन्होंने छत्तीसगढ़ी लोकगीत प्रस्तुत किए।

दूसरे दिन 22 मार्च को फिर से त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ली में छत्तीसगढ़ी नाचा व लोक गीतों का कार्यक्रम रखा गया। इस कार्यक्रम का आयोजन स्पोर्ट्स एंड रिक्रिएशन कौंसिल भिलाई और स्टील वर्कर्स यूनियन भिलाई ने संयुक्त रूप से किया था।

इस सांस्कृतिक संध्या का शुभारम्भ संसद सदस्य श्री चंदूलाल चंद्राकर के स्वागत भाषण से हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में राम-नामी नृत्य प्रस्तुत किया गया लेकिन दर्शकों ने पंथी नाचा की प्रबल मांग की। श्रीमती मंजूला दासगुप्ता ने छत्तीसगढ़ी लोक गीत, गजल

और रूसी गीत सुनाए - लोगों ने इस गीतांक को काफी सराहा। कु. चित्रा पॉल ने एकल नृत्य प्रस्तुत किया। दर्शकों में उल्लेखनीय थे शिक्षा एवं समाज कल्याण उप-मंत्री श्री अरविंद नेताम; श्री आर. पी. बिलिमोरिया, डायरेक्टर (पर्सोनल) सेल ; हमारे जनरल मैनेजर श्री पृथ्वी राज आहूजा, अनेक संसद सदस्य; भिलाई में रह चुके अनेक अधिकारीगण, दिल्ली के कलाकार व पत्रकारगण।

पर्सोनल मैनेजर श्री एन.के.सिंह, जो कि स्पोर्ट्स एंड रिक्रिएशन कौंसिल के अध्यक्ष भी हैं ने कलाकारों का परिचय कराया। उन्होंने धन्यवाद ज्ञापन भी किया।

छत्तीसगढ़ नाचा दल के सदस्य थे - सर्वश्री देवदास, निर्देशक; बुधारू जगदीश प्रसाद, मांदल वादक; लालाराम; भइयाराम; फिरंता; सम्पत; घनश्याम; जैपाल; जैसिंह; तेजराम; बगस राम; कु. सोमू दासगुप्ता और कु. चित्रा पॉल। श्री जे. एस. सहगल, इंडस्ट्रियल रिलेशंस ऑफिसर (टी) इस दल के मैनेजर थे।

भिलाई के इस छत्तीसगढ़ी नाचा दल ने लगता है, दिल्लीवासियों के हृदय पर अपना अधिकार जमा लिया है। अशोका हॉटल ने अपने सेपर हॉल में एक माह के प्रदर्शन के लिए ऑफर दिया है। दूसरा ऑफर है अंतर्राष्ट्रीय वनविद्या सम्मेलन, हैदराबाद हाउस का।

छत्तीसगढ़ी लोक नृत्य अपनी विशिष्टता के कारण लोगों के मन-मस्तिष्क में किस तरह छा जाता है - यह एक जीता जागता उदाहरण है। (स्टील बुलेटिन भिलाई इस्पात संयंत्र की साप्ताहिक समाचारिका) वर्ष -5, अंक 14, 5 अप्रैल 1975 से साभार।

स्व.देवदास बंजारे जी
अपने विदेशी प्रशंसक
के साथ

मांदर की थाप पर देवदास के साथ कभी थिरकती थीं महिला कलाकार

✦ विमल शंकर झा, भिलाई

मौलिकता और सृजनात्मकता पंथी नर्तक देवदास बंजारे की विशेषता थी। पंथी नृत्य में महिला कलाकारों का इस्तेमाल उनके द्वारा किया गया एक ऐसा अनूठा प्रयोग था जिसके चलते पंथी को खासी लोकप्रियता मिली। पर हर प्रयोगधर्मी कलाकार की तरह उन्हें भी पंथी नृत्य में महिला कलाकारों को शामिल करने को लेकर विरोध का सामना करना पड़ा। दो दशकों तक मांदर की सुरीली थाप और देवदास के मधुर पंथी गीतों पर उनके साथ थिरकती महिला कलाकारों के नयनाभिराम नृत्य की यादें कलाकारों और कलानुरागियों के जेहन में अभी भी तरोताजा हैं। सत्तर के दशक में जब देवदास बंजारे ने इस कला के क्षेत्र में पदार्पण किया उस समय तक पंथी नृत्य अपने पारंपरिक स्वरूप में ही चलन में था। सामान्यतः पुरूष कलाकार ही पंथी नृत्य किया करते थे। देवदास ने इस विधा को आधुनिक टच देते हुए पंथी नृत्य में महिला कालाकारों को शामिल कर अनूठा प्रयोग किया। उन्हें इस अभिनव कलात्मक सोच की प्रेरणा भिलाई इस्पात संयंत्र के महाप्रबंधक पीआर आहूजा से मिली। 1971 में भिलाई विद्यालय वार्षिकोत्सव पर पंथी नर्तक देवदास बंजारे के पंथी नृत्य का भी कार्यक्रम आयोजित किया गया था उस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित पीआर आहूजा ने जब देवदास के दल का पंथी नृत्य देखा तो इतने अधिक मंत्रमुग्ध हुए कि कार्यक्रम समाप्त होने के बाद प्राचार्य से दूसरे दिन उनसे देवदास और उनके सह कलाकारों से मिलाने कहा। दूसरे दिन जब देवदास अपने कलाकारों के साथ पहुंचे तो आहूजा ने उनकी कला की प्रसंशा करते हुए दल के दस कलाकारों को भिलाई इस्पात संयंत्र में नौकरी देने की खुशखबरी सुनाई। उन्होंने देवदास बंजारे को सलाह देते हुए कहा कि - तुम अपने पंथी दल में नृत्य करने एक कुड़ी (लड़की) रखो। जब तक कुड़ी नहीं रहेगी पंथी नृत्य रोमेंटिक नहीं होगा। पंथी नृत्य को भांगड़ा नृत्य की स्टाइल में करो। तेज नृत्य के साथ मांदर भी जोर से बजाओगे तो तुम लोगों की कला में और निखार आएगा। श्री आहूजा की इस सलाह पर अमल करने में देवदास ने जरा भी देर नहीं की और महिला नृत्यांगना की तलाश शुरू कर दी। जल्द ही उन्हें अपने प्रयास में सफलता मिल गई। उनके पंथी दल में शामिल होने वाली पहली महिला कलाकार चित्रा पाल थी। वे सेक्टर चार में रहती थी, उनके पिता बीएसपी में कार्यरत थे। चित्रा जितनी खूबसूरत थीं। उतनी ही अच्छी लोक नृत्यांगना भी थीं। पंथी नृत्य में पुरूष कलाकारों के

साथ पंथी गीत गाते और पिरामिड बनाते हुए एक महिला कलाकार को थिरकते हुए देखना लोगों के लिए पहला व रोचक अनुभव था। बुधारू की मांदर की थाप, देवदास के सुरीले पंथी गीतों पर उनके साथ जब दर्शक एक युवती को मोहक नृत्य करते देखते तो भाव विभोर हो उठते थे। देवदास के पंथी दल के वरिष्ठ कलाकार साठ वर्षीय अगराहिज बताते है कि गुरू (देवदास बंजारे) ने ही महिला कलाकारों को पंथी नृत्य सिखाया था। मांदर वादक बुधारू भी उन्हें सहयोग किया करते थे। तेज गति के पंथी नृत्य और दल में महिला कलाकार के प्रभावोत्पादकता के चलते देवदास के पंथी नृत्य की लोकप्रियता तेजी से बढ़ने लगी। प्रसिद्ध मूर्तिकार जेएम नेलसन बताते है कि देवदास के मोहक तेज नृत्य और इसमें महिला कलाकार को शामिल करने के उनके अभिनव प्रयोग से पंथी नृत्य को सत्तर के दशक में काफी लोकप्रियता मिली। 1975 में भोपाल में उनके द्वारा प्रदर्शित झांकी के साथ देवदास के पंथी नृत्य का कार्यक्रम चल रहा था। हजारों दर्शक थे। जब दर्शकों ने पंथी दल में एक महिला कलाकार को नृत्य करते देखा तो वे इतने अधिक भावविभोर हो उठे कि स्टेज पर चढ़े बड़ी मुश्किल से सैकड़ों दर्शकों के बीच से चित्रा को निकालकर ग्रीन रूम में ले जाया गया। नेलसन बताते हैं कि देवदास एक प्रयोगधर्मी कलाकार थे। वे और चित्रा तथा मांदर बजाते बुधारू दर्शकों के प्रमुख आकर्षण हुआ करते थे। उनके पंथी दल में चित्रा पाल 197 2 से 1976 तक रही। उनके विवाह के बाद सोमू दास गुप्ता, लक्ष्मी शर्मा, आशा खरे (स्वर्णमाला श्रीवास्तव), ऊषा खरे (कुंजलता), मालती रजक और रजनी रजक ने 1976 से 1989 तक उनके पंथी दल में नृत्य किया। चित्रा की तरह ये सभी अच्छी लोककलाकार थीं। देवदास बंजारे के साथ उन्होंने देश के अनेक शहरों में कई यादगार कार्यक्रम दिए। आशा व रजनी रजक दिल्ली में प्रस्तुत अपने कार्यक्रम को यादकर भावविभोर हो उठती है। विवाह के बाद आशा व ऊषा खरे को पंथीनृत्य से तौबा करना पड़ा। आशा का विवाह बिलासपुर में प्रतिष्ठित श्रीवास्तव परिवार के के.के.श्रीवास्तव से हुआ। इसी तरह उनकी बड़ी बहन ऊषा को भी विवाह के बाद लोकनृत्य छोड़ना पड़ा भिलाई इस्पात संयंत्र के बीबीएम में कार्यरत आशा (स्वर्णमाला) श्रीवास्तव बताती है कि बंजारे जी के पंथी दल में नृत्य करना एक गौरवपूर्ण व यादगार अनुभव था। हमारे परिवार के उनसे पुराने घनिष्ठ संबंध थे। दिल्ली में सेल कार्यक्रम में प्रस्तुति के बाद ही बीएसपी में उनकी नौकरी लगी थी। श्रीमती श्रीवास्तव बताती हैं कि 2.5 मिलीयन टन उत्पादन के कीर्तिमान पर बीएसपी द्वारा निकाले गये ग्रीटिंग में देवदास बंजारे के साथ पंथीनृत्य करने हुए उनकी तस्वीर प्रकाशित की गई थी। (=हरिभूमि से साभार)

छत्तीसगढ़ माटी के रत्न पंथी नृत्य के सुप्रसिद्ध कलाकार स्व. देवदास बंजारे को काव्यात्मक श्रद्धा सुमन समर्पित।

सुघ्घर पंथी निरत करइया, पल पल सुरता आ ही तोर।
कला के दया, मया, बिसरागे, काबर बन गे काल कठोर ।।टेक।।
गांव धनोरा की मांटी मं, तेंहर जनम धरे रहे।
संस्किरित के दया मया ह, तोर हिरदे मं भरे रहे।
कई विदेस म घूमत घूमत, कला के करे अंजोर ।।1।। सुघ्घर.
सुन्ना होगे कला जगत, पावस पतझर कर डारे।
छत्तीसगढ़ महतारी के तय बेटा परम दुलारे।
कहाँ बिलागे, खोजत खोजत, थकवा लागहि मोर ।।2।। सुघ्घर.
गोठ करत मं सकुचावत हो, बोलो अमरित बानी।
अपनापन कोमल हिरदे, कोंनों नहिं कहि अमिमानी।
''निर्झर'' चौंसठ कला अपन मं, राखे डोर बटोर ।।3।। सुघ्घर.

✦ जय नारायण सोनी ''निर्झर''
उपाध्यक्ष - वीणा पाणि साहित्य समिति, दुर्ग
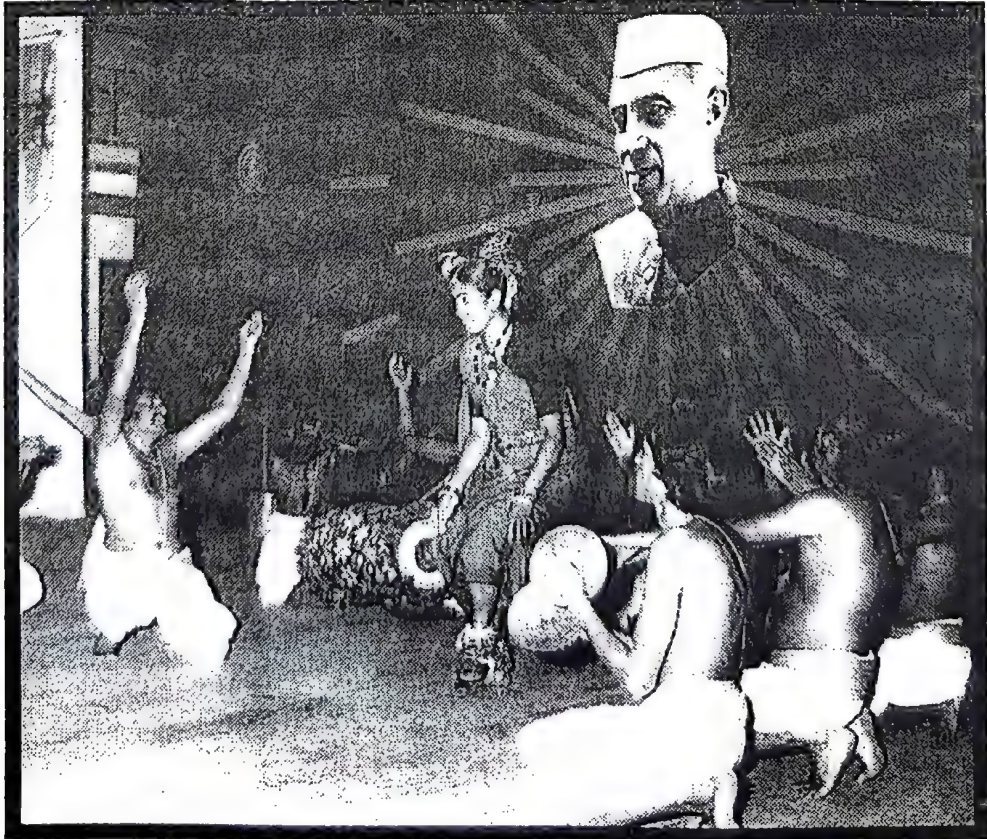
सतनाम प्रहरी गुरूदेवदास बंजारे

✦ डॉ. देवनारायण "अंबेडकरवादी"
किरंदुल

सतनाम प्रहरी छत्तीसगढ़ के गौरव, अंतर्राष्ट्रीय पंथी नर्तक गुरू देवदास बंजारे का जन्म सन् 01-01-1947 को ग्राम सांकरा (धमतरी) में हुआ था। सामान्य कृषक परिवार साधारण पढ़ाई लिखाई खान-पान, रहन-सहन, सोच-विचार, क्रिया-कलाप बचपन से सच्चाई की शिखर पर चढ़ने की तमन्ना गुरू देवदास बंजारे मे थी। विज्ञान संगत चेतना और मन को प्रफुल्लित करने की कला नृत्य व गान को अपनी प्रतिभा से विश्व में बिखेरने की ठानी। तथा चल पड़े सतनाम प्रवर्तक गुरू घासीदास बाबा के शरण व सिद्धांत में; फिर बाबा का आशीर्वाद ने पंथ का प्रवाह पंथी गाना व नाच के साथ सतनाम आन्दोलन अभ्यास ने श्री देवदास बंजारे को भिलाई इस्पात संयंत्र के विद्यालय में नृत्य गुरू का पद दिलाया। नृत्य शिक्षक के रूप में उनकी पदोन्नति हुई।

गुरू घासीदास बाबा के सतनाम आंदोलन को आगे बढ़ाते , सतनाम का पाठ पढ़ाते चेतना की अलख जगाते गुरू देव दास बंजारे ने अथक प्रयास व अभ्यास से कदम-कदम तरक्की की सीढ़ी चढ़ते गये और बहुत ही जल्द लाखो, सतनामी के दिलो दिमाग में सतनाम प्रहरी के रूप में छा गये। उनके चेला, बनते गये। फिर मुकाम मिला प्रसिद्ध पंथी नर्तक का। मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ का गौरव का खिताब मिला।

छत्तीसगढ़ तथा भारत के सत्य का नृत्य पंथी की सच्चाई को विदेशों मे क्षेपित करने भारत का नाम रौशन करने भारत की सच्चाई , सादगी,समानता,स्वाभिमान को नृत्यकला के द्वारा दुनिया के देशो में दिखाया, बताया, समझाया। भारत की कला की वाहवाही हुई विदेशों में।

विभिन्न समिति संस्था के कार्यक्रमों के आयोजन मे सैकड़ो कार्यक्रम प्रस्तुत कर सतनाम की अलख जगाये। अनेक शासकीय क्रिया कलापों में उपस्थिति देकर सच्चाई को उजागर जीवन पर्यन्त करते रहे। सतनाम आंदोलन में संतशिरोमणि रविदास, सतगुरू कबीर, सतगुरू नानक, सतगुरू घासीदास, सतगुरू बालकदास, क्रांतिवीर नकुलदेव ढ़ीढ़ी सतनामी अस्मिता के रक्षक रजवा, बिट्ठल, केजहा, ममतामयी मां मिनीमाता की अविस्मरणीय श्रेणी मे गुरू देवदास बंजारे का नाम सदा अमर रहेगा।

छत्तीसगढ़ भूमि का सतनाम योद्धा स्व. गुरू देवदास बंजारे की आकस्मिक मृत्यु 26-08-2005 को एक दुर्घटना में भिलाई रायपुर के बीच मोटर साइकिल और बस की भिड़न्त से हो गई। छत्तीसगढ़ के गौरव, सतनाम प्रहरी सदा-सदा के लिए सतनाम मे विलीन

हो गये।

गुरू स्व. देवदास बंजारे की जंयती एवं स्मृति दिवस प्रत्येक वर्ष पूरे भारत भूमि के विभिन्न संस्थानो, सर्व समाजों द्वारा मनाई जानी चाहिए। तभी गुरू देवदास बंजारे को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। देश विदेश मे सच्चाई को पहुंचाये हैं उसकी कद्र होगी। लोककला का सही-सही सत्कार होगा। खास कर सच्चाई को मानने वाले सतनामी समाज गंभीरता से विचार करें और गुरू देवदास बंजारे के अधूरा काम को पूरा करें।

18 दिसंबर आगे भईया,
पंथी नाचे गाये बर, कोन ला बलाबो
गुरू देवदास बंजारे स्वर्ग में है,
फोटो ल रख के कैसेट ल बजाबो !
आंखी केआंसू ल पोंछ-पोंछ के,
मन ल मढ़ाके गुरूघासीदास के जयंतील मनाबो ॥

(समाचार) गुरू बालकदास जयंती सम्पन्न

भोपाल/गुरू घासीदास सेवा समिति भोपाल के तत्वावधान में दिनाँक 27-8-2005 दिन शनिवार को गुरू बालकदास जयंती कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गुरूजी का भजन प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। किशुनदास बंजारा सर्वधर्म का लोकी भोपाल के द्वारा मंगल भजन का कार्यक्रम पेश किया गया जो शिक्षा प्रद था। इस अवसर पर गुरू बालकदास पर आधारित सतनाम ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया जिसमें प्रथम पुरस्कार श्री किशन बंजारे द्वितीय श्री कोमल गायकवार तृतीय पुरस्कार पं. मालिकदास लहरे को प्रदान किया गया। कार्यक्रम में गुरूबालकदास के जीवन पर प्रकाश डालते हुए समिति के संरक्षक श्री सी. आर. सोनवानी ने कहा कि गुरूबालकदास बचपन से ही क्रांतिकारी थे उन्होंने बड़े-बड़े राजाओं से सीधे संपर्क किया और अपने महत्वपूर्ण ज्ञान से सतनाम का नाम ऊँचा किया। अंग्रेजी सरकार द्वारा राजा की उपाधि एवं सेना रखने का अधिकार दिलवाया इसी प्रकार समाज के उत्थान हेतु जन्म-मृत्यु संस्कार, विवाह नियम, अखाड़ा प्रथा आदि महत्वपूर्ण कार्य किए जिससे समाज एक सूत्र में बंधा और आत्मनिर्भर बनें। पं. मालिकदास ने कहा गुरूजी ने समाज सुधार हेतु छड़ीदार भंडारी एवं महंतों की नियुक्ति किया। गाँव-गाँव में अठगवाँ कमेटी का निर्माण किया। उन्होंने सतनामी समाज को तकलीफ न हो इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर सदाव्रत आंदोलन चलाया जिसमें 1 टाइम का भोजन का चांवल दान करना होता था इस एकत्र दान को तेलामी के ढ़ाबा महल मे रखवाया जाता था अकाल पड़ने पर समाज में वितरीत की जाती थी।

ऐसे महान क्रांतिकारी गुरू बालकदास जी थे जो समाज केलिए कार्य करते हुए अपने प्राण की भी बलि दे दी। उनका सपना था समाज में मेरे बाद कोई गुरू न हो परन्तु ऐसा नहीं हुआ इसलिए समाज की ऐसी हालत है। ऐसे महान गुरू को मेरा बार-बार प्रणाम वंदना।

द्वारा - कोमल गायकवार भोपाल

(संस्मरण)

संस्कृति के ध्वज वाहक स्व. देवदास बंजारे

✦ **प्रदीप वर्मा,** साहित्यकार दुर्ग

मेरा पहला परिचय स्व. देवदास बंजारे से 1972 में हुआ। उन दिनों मैं "छत्तीसगढ़ उत्कर्ष समिति के बैनर तले "दौनापान" सांस्कृतिक कार्यक्रम बना रहा था। मैं और स्व. कलीराम बन्धे जी देवबलौदा मेला देखने गये थे। वहां पंथी नृत्य की प्रतियोगिता हुई, जिसमें श्री देवदास बंजारे की पंथी पार्टी को प्रथम स्थान मिला। बधाई देने के उपरांत मैने "दौनापान" कार्यक्रम में उनसे पंथी नृत्य की सांस्कृतिक प्रस्तुति करने का आग्रह किया। उन्होंने उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। वहां उपस्थित जन समुदाय एवं कुछ महंतों ने इस पर घोर आपत्ति दर्ज करते हुए कहा कि - "तुम हिंदुआ मन हमर धरम के चीज ल नाचा पैखन बनाना चाहत हव हमन अइसन नइ होवन दन।"

वे बहुत आक्रोशित हो गये, तब सतनाम धर्म संरक्षिका करूणा माता जी ने समझाया कि "एकर बात ल तो सुनव"। मैने उन्हें समझाया कि हम हिंदुआ अऊ तुम सतनामी इही दूरी ल मेटाये बर एक कोती जेठउनी एकादशी "तुलसी माता" के पूजा होही अऊ उही जगह पंथी नृत्य होही। उहां जैतखांम अऊ गुरूबबा के फोटो पूरा मान सम्मान के साथ स्थापित करे जाही। बड़ी मुश्किल से सब शांत हुए। श्री देवदास बंजारे एवं उनकी पार्टी के सदस्य अडिग एवं अविचलित रहे और उन्होंने हर संभव सहायता देने का वचन दिया।

श्री कमल किशोर तत्कालीन पर्सनल मैनेजर भिलाई इस्पात संयंत्र के कर कमलों से दो वर्ष पश्चात सिविक सेंटर मैदान में प्रथम मंचन के समय करीब 12 से 15 हजार दर्शकों के समक्ष जब पंथी का प्रदर्शन हुआ तो देवदास बंजारे के पग संचालन, श्री बुधारू के मांदर वादन एवं पुरानिक लाल चेलक जैसे रागी के प्रदर्शन ने ऐसा समां बांधा कि दर्शकों के हृदय में अमिट छाप छोड़ गया। श्री कमल किशोर जी की अनुशंशा पर पंथी दल के सभी सदस्यों को बी.एस.पी. मैं नौकरी तथा श्री देवदास बंजारे को प्रमोशन के रूप में लेक्चर का पोस्ट मिला।

श्री देवदास बंजारे अपने साथियों समेत हमारी सांस्कृतिक संस्था के कार्यक्रमों मे (बिलासपुर) चंदखुरी (रायपुर) नंदिनी (दुर्ग) आदि 8-10 स्थानों पर कार्यक्रम देने गये

परन्तु कभी भी पारिश्रमिक नहीं स्वीकार किये। बीच में किसी कारण वश एक कार्यक्रम में नहीं जा पाये तो उनकी अनुशंशा पर कातुलबोड की श्रीमती लक्ष्मी बाई बंजारे महिला पंथी पार्टी को उनकी इच्छानुरूप मौका दिया गया। उनका गाया प्रिय गीत " शंख सुंदर बाजे मृदंग घंटा बाजे नाचथे संगी गलियों में हो" जब भी टेपरिकार्ड पर सुनता हूँ तो लगता है, सामने बैठे सुना रहे हैं। वे एक सीधे, सरल सच्चे इंसान थे। मेरे निवास पर उनका आना जाना लगा ही रहता था। मैं भी कई बार धनोरा गया एवं उनके परिवार वालों से मिलने जाता था। उनका असमय चले जाना समाज, प्रांत एवं देश के लिये अपूरणीय क्षति है और मैंने तो अपना छोटा भाई ही खो दिया।

माटी के चोला

घोर : ए माटी के काया, ये माटी के चोला,
के दिन रहीबे, बता दे मोला..........2

पद (1) : ए तन हावे तोर माटी के खिलौना हो 2
माटी के ओढ़ना हो माटी के बिछौना हो.......2

उड़ान : ये माटी के काया छोड़ जाही तोला। के दिन.........

पद (2) : माटी के खिलौना बाबा सुंदर बनाये हो 2
टूटे फूटे में कछु काम नई तो आवे हो.........2

उड़ान : तरसथे चोला, ज्ञान दे दे मोला। के दिन..........

पद (3) : तोर महीमा हा सबों देवता से न्यारी हो 2
फल-फूल पाती चढ़ावे नर नारी हो 2

उड़ान : सत्यनाम लेके तरजाहीं चोला। के दिन......

पद (4) : आये हस अकेला हंसा, जाबे तै अकेला हो 2
ये दुनिया हवे माया कर मेला हो.......2

उड़ान : दया धरम के कर लेबे सौदा। के दिन.........
ये माटी के काया, ए माटी के चोला,
के दिन रहिबे बता दे मोला,

स्व. देवदास बंजारे द्वारा गाया जाने वाला एक प्रसिद्ध पंथी गीत

स्व. देवदास बंजारे पंथी नृत्य शिल्पी सतनाम का अंतर्राष्ट्रीय प्रचारक

जन्म - 1 जनवरी सन् 1947 देवदास बंजारे लोक नृत्य कला के सर्जकों में से एक थे। 64 देश के 84 मंचों में अपनी कला लंदन, पेरिस, फ्राँस, जापान और अनेक देशों में प्रदर्शित कर अपनी अलग ही पहचान छत्तीसगढ़ प्रान्त और भारत में रखने वाले देवदास का व्यक्तित्व सहज सरल सीधा-साधा निश्छल था। हर किसी से हंसहंसकर बोलना और अपनी पहचान कायम कर देना। कुछ लोग आते हैं और धूमकेतु की भांति अपना प्रकाश बिखेरते हुए परनानंद में विलीन हो जाते हैं। साधक पुत्रों का प्रेरणाश्रोत बनकर जीते हैं। देवदास पर अनेक लोग लिखेंगे। इतिहास के पृष्ठों में अपनी अलग पहचान बनाने वाले स्व. बंजारे युग के प्रवर्तकों में से एक हैं जिन्हें समूचा छत्तीसगढ़ सदैव याद करता रहेगा।

कुछ लोग अदृश्य शक्तियों की उपासना में ही अपना जीवन सफल बना लेते हैं। शंकर के तांडव ने उन्हें मृत्यु के देवता के स्थान पर नटराज का नाम दिया जो नृत्याचार्यों के लिये पथ प्रदर्शक बना। लोक धुन, लोक-गीत और लोक नृत्यों के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ी में अपना सारा जीवन गुजार देते हैं। वही कुछ लोग मंचीय कार्यक्रमों के माध्यम से जन-जन का ध्यान अनायास अपनी ओर आकृष्ट कर समाज, प्रान्त और देश का नाम भी सारे भूमंडल में, फैलाने में अपनी अहम् भूमिका का निर्वहन करते हैं। देवदास बंजारे नृत्य के क्षेत्र में अपना परचम संसार के अनेक देशों में फहरा कर छत्तीसगढ़ की लोक कलाओं को जन-जन तक फैलाने में अपनी अहम् भूमिका निबाही और इस क्षेत्र में अमर हो गये।

पंथी गायक ज्यादातर गुरू घासीदास बाबा के द्वारा दिये हुये उपदेशों को गायन, वादन और नृत्य के माध्यम से प्रस्तुतीकरण देते हैं। इसी विधा को अपना मुख्य मार्ग बनाकर उसे सुंदर ढ़ंग से प्रदर्शित करना और नवीन साज सज्जा के साथ उसे संगीत और गीत के क्षेत्र में स्थापित करने में सफल भूमिका का निर्वहन करने में देवदास का कोई सानी नहीं था। वे स्वयं गाते थे, नृत्य करते थे और बाबा के उपदेशों को प्रचारित भी करते थे। यह कहना जरा भी अतिशयोक्ति नहीं होगी कि देवदास सतनाम पिता के प्यारे बेटे थे तभी तो नृत्य के माध्यम से ही वे उन्हें समूचे छत्तीसगढ़ को, भारत में ही नहीं, संसार में खास पहचान बनाने में सफल रहे। ऐसे अनोखे प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी स्व. देवदास बंजारे को भारतरत्न से सम्मानित करना राष्ट्र की जरूरत होनी चाहिये वहीं छत्तीसगढ़ शासन को, भी चाहिये कि लोक कला के इस शिल्पी के नाम से हर गांव में सांस्कृतिक गृहों को लोककलाकारों को देकर उनके सांस्कृतिक-साहित्यिक प्रतिभाओं को उकेरने हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान करें। जिससे अंचल की कलाकार - प्रतिभायें अपनी दशा, दिशा से अवगत हो सके। छत्तीसगढ़ का यह दुलरूआ बेटा सड़क दुर्घटना का शिकार हो गया। उनके नाम पर छत्तीसगढ़ शासन दो लाख रूपये किसी श्रेष्ठ नर्तक को अथवा एक कलाकार को प्रतिवर्ष पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा करें।

भवदीय

✦ रमेश कुमार शर्मा

संस्थापक छत्तीसगढ़ कलाकार कल्याण महासंघ, दुग

दलित साहित्यकार - सामाजिक क्रांति के अगुवा

✦ एस. एल. सागर

दलितों का सामाजिक और साँस्कृतिक नेतृत्व दलित कलमकार और विचारक कर रहें हैं। और यह सच है कि आज कुछ दलितों में जागृति आई है। उनमें अपने को पहचानने और अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करने की जो सोच पैदा हुई है, वह सब दलित कलमकारों, पत्रकारों, साहित्यकारों की ही देन है। क्रांति का निर्माण साहित्यकार ही करता है क्योंकि वह सोच बदलता है, विचार बदलता है। क्रान्ति विचार परिवर्तन से आती है अर्थात् परिवर्तन का नाम ही क्रान्ति है। परिवर्तन विकास के लिए होता है और पुरानी रूढ़ियों का विनाश कर देता है। दलितों का विकास पुरानी रूढ़ियों को मिटाकर ही हो सकता है; जो दलित कलमकार कर रहे हैं। डॉ. अम्बेडकर ने भी यही कहा था कि सांस्कृतिक क्रांति का अनुशरण राजनीति करती है। समाज परिवर्तन का असली सूत्रधार सामाजिक क्रांतिकारी होता है, राजनैतिक सत्ताधारी नहीं। दलित समाज का दुर्भाग्य है कि इसमें जो भी नेता पैदा हो रहे हैं या हुए हैं ; वे सब राजनीतिक सत्ता के लिए लड़ते रहे हैं। किसी ने सांस्कृतिक क्रांति की अगुवाई नहीं की। दलित नेताओं को स्मरण रखना चाहिए कि इतिहास उसी का मूल्य दर्ज करेगा जो क्रांति के वाहक बनेंगें और आज जो दलित नेता सत्ता की लड़ाई मे रत हैं, इतिहास में उनका नाम 10-20 वर्ष बाद ही दिखाई और सुनाई नहीं पड़ेगा। अभी वे भले ही कितना ही सत्ता सुख, ऐश, आराम भोग लें।

वार्षिक सदस्यों की सूची - 2005

(1) डॉ. एम. आर. गहिने - ग्राम भाठापारा (राजनांदगांव)	- 100.00
(2) श्री कुलेश्वरदास गहिने - ग्राम भाठापारा (राजनांदगांव)	- 100.00
(3) श्री अमरूराम लहरे - ग्राम भाठापारा (राजनांदगांव)	- 100.00
(4) श्री लालचंद गहिने - ग्राम भाठापारा (राजनांदगांव)	- 100.00
(5) श्री लालश्याम शाह सिरमौर - ग्राम भाठापारा (राजनांदगांव)	- 100.00
(6) श्री के. आर. गहिने - ग्राम भाठापारा (राजनांदगांव)	- 100.00
(7) श्री गैंदलाल जांगडे - ग्राम कांकेतरा (राजनांदगांव)	- 100.00
(8) श्री मदनलाल भंडारी - ग्राम मौहाभाठा (राजनांदगांव)	- 100.00
(9) श्री अशोककुमार खरे - ग्राम ठाकुरटोला (राजनांदगांव)	- 100.00
(10) श्री धरमदास कोसरे - ग्राम ठाकुरटोला (राजनांदगांव)	- 100.00
(11) श्री आर.पी.टंडन व्याख्याता - शा.उ.मा.शा.मानपुर	- 100.00
(12) श्री के. एल. मतावले - शा.उ.मा.शा.मानपुर	- 100.00
(13) प्रो. श्री पी.रात्रे प्राचार्य शा.महा. मानपुर	- 100.00
(14) श्री एम.एल.देशलहरे सी.ई.ओं. जनपद पंचायत मानपुर	- 100.00
(15) श्री बी.डी.सतनामी अधिकारी इलाहाबाद बैंक मानपुर	- 100.00
(16) श्री आनंद टंडन औषधि सेवक शा.होम्योपैथिक अस्पाताल मानपुर	- 100.00
(17) श्री दिलीप बंजारे बी गार्ड वन विभाग मानपुर	- 100.00
(18) श्री राम सेवक अनेश्वरी डिप्टीरेंजर वन विभाग मानपुर	- 100.00
(19) श्री हरप्रसाद ओंगरे कृ.वि.वि.अधि. कृषि विभाग मानपुर	- 100.00
(20) श्री विजय लाल खुटेरे स्वा.विभाग सामु.चि.मानपुर	- 100.00
(21) श्री एच. डी. बघेल शिक्षक कोहका, कदांड़ी मानपुर	- 100.00
(22) श्री बी. आर. सिरमौर प्राचार्य शा.उ.मा.शा.औंधी	- 100.00
(23) श्री देवलाल कुर्रे ठेकेदार सामुदायिक स्वा. केन्द्र अं. चौकी	- 100.00
(24) प्रो.पी. डी. सोनकर प्राध्यापक शा.महा. अं.चौकी	- 100.00
(25) श्री एस आर. कनौजे प्राध्यपाक शा.महा.अं.चौकी	- 100.00
(26) श्री जे. आर. परतेती प्राध्यपाक शा.महा.अं.चौकी	- 100.00
(27) श्रीमती निर्मला जोशी व्याख्याता क.उ.मा.शा. चौकी	- 100.00
(28) श्री डी.सी.रात्रे पटवारी आमापारा वार्ड 4 अं. चौकी	- 100.00
(29) डॉ. राजेन्द्र भगत साहब बी.ई.ओ. पशु चिकित्सालय अं.चौकी	-100.00

क्रमशः

Nilesh Kumar anant

सत्यध्वज के वरिष्ठप्रतिनिधि

1. नाम - डॉ. एम. आर. गहिने
2. पिता का नाम - स्व. श्री ईतवारी प्रसाद गहिने
3. माता का नाम - स्व. श्रीमती ढ़ेला बाई गहिने
4. जन्मतिथि - 20.1.1934
5. जन्म स्थान - ग्राम अचानकपुर भाठापारा- राजनांदगांव छ.ग.
6. शिक्षा - एम. ए. (राजनीति वि.) आयुर्वेद रत्न एम.एस.सी.ए.
7. व्यावसाय - रिटायर्ड प्रधान पाठक पूर्व मा.शाला एवं वर्तमान में जन स्वास्थ्य सेवा व समाज सेवा
8. जाति - सतनामी
9. धर्म - सतनाम धर्म
10. प्रति निधि कब से और क्यों बने - सन् 1994 से अब तक, बाबा गुरू घासी दास जी के सतनाम आन्दोलन को, उनके आदर्शों एवं नीति का जन जन मे सत्य का प्रचार करने हेतु सत्यध्वज पत्रिका के माध्यम से।
11. रूचियां - सत् साहित्य एवं स्वास्थ्य संबंधी पुस्तकों का पठन पाठन जन स्वास्थ्य सेवा, नाटक, एकांकी का अध्यन एवं अभिनय पंथी नृत्य एवं गीत देखना व सुनना, सत्य का प्रचार करना।
12. प्रेरणा श्रोत - मेरे पुज्य माता पिता, परमपुज्य बाबा घासीदास जी के सतनाम दर्शन एवं डॉ. अम्बेडकर के आदर्श विचार।
13. उपलब्धियाँ - विश्व का सबसे बड़ा "सत्गुरू शताब्दी कैलेण्डर सन् 01 से सन् 10200 वर्ष तक उपलब्ध है।
14. सम्मान/पुरस्कार - भारतीय दलित साहित्य अकादमी छत्तीसगढ़ द्वारा डॉ. अम्बेडकर स्मृति पर्व पर "समाज वीर सम्मान - 2002 की मानद उपाधि से अलंकृत।
15. पद/जिम्मेदारी - अध्यक्ष,क्षेत्रिय सतनाम सेवा समिति "फ़रहद" क्षेत्र - सोमनी, जिला - राजनांदगांव (छ.ग.)
16. समाज को संदेश - शिक्षित बनो, साक्षर नहीं। सदा वचन सत्य, कर्म सत्य एवं व्यावहार सत्य हो।
17. भविष्य की योजनाएं - जन जन में सत्य का प्रचार करना, पथ भ्रष्ट लोगों को यथा सम्भव बाबा जी ने बताएं सत्य मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करना।
18. पूरा पता - डॉ. एम.आर. गहिने, ग्राम - भाठापारा, पो.-भेड़ीकला, जिला - राजनांदगांव (छ.ग.) पिन - 491441

ANANTNilesh84

मुद्रक :- आशा ऑफसेट प्रिंटर्स, सुपेला, भिलाई फोन : 5030566